विषय सूची

जैन

धर्म शिक्षावली

तीसरा भाग

पाठ १—मेरी भावना

[जुगल किशोर जी मुख्तार]

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया,
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर जिन, हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो,
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो॥१॥
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं,
निजपर के हित साधन में जो, निश दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी [illegible] के, दुख-समूह को हरते हैं॥२॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे,
उन ही जैसी चर्या [illegible] यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे
नहीं सताऊँ किसी जीव [illegible] झूठ कभी नहीं कहा करूँ,
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, [illegible]तोषामृत पिया करूँ॥३॥

अहङ्कार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्षाभाव धरूँ।
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहां तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ॥४॥
मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे,
दीन दुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे।
दुर्जन-क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे॥५॥
गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥६॥
कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ, या मृत्यु आज ही आ जावे।
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे,
तो भी न्याय मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥७॥
होकर सुख में मग्न न फूले, दुख में कभी न घबरावे,
पर्वत नदी श्मशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावे।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर, यह मन दृढ़तर बन जावे,
इष्ट वियोग अनिष्ट योग में, सहन शीलता दिखलावे॥८॥

---

* बालिकायें 'परमर' का पाठ पढ़ें।

...ी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी नहिं घबरावे,
वैर पाप अभिमान छोड़ सब, नित्य नये मङ्गल गावें।
घर-घर चर्चा रहें धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावें,
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज जन्म फल सब पावें।६।
ईति भीति व्यापे नहिं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करे।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शांति से जिया करे,
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्वहित किया करे।१०
फैले प्रेम परस्पर सब में, मोह दूर पर रहा करे,
अप्रिय कटुक कठोर शब्द, नहिं कोई मुख से कहा करे।
बनकर सब 'युगवीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें,
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुख संकट सहा करें।११

प्रश्नावली

१—मेरी भावना पढ़ने से क्या लाभ है ?
२—जगत में जीवों के प्रति कैसे भाव रखने चाहिये ?
३—इष्टवियोग और अनिष्टयोग से तुम क्या समझते हो ?
४—'सुखी रहें सब जीव जगत के' यहाँ से लेकर "फल सर्व हित किया करें" तक पढ़ो और साधारण भावार्थ बताओ ?
५—संसार में सबसे बड़ा धन कौन सा है ?
६—नीचे लिखों के साथ क्या बर्ताव करना चाहिए—दीन दुखी जीव, दुर्जन और गुणी।
७—मेरी भावना के बनाने वाले कौन हैं ? उनके सम्बन्ध में

पाठ ? गतियाँ

बालको ! तुम देखते हो कि संसार में जीवों की यह विशेष अवस्थायें होती हैं। कितने ही जीव मनुष्य हैं और कितने ही पशु पक्षी, कीड़े मकोड़े आदि हैं, यह तुम नित्य प्रति देखते ही हो।

यह भी तुमने बहुत बार किसी न किसी को कहते सुना होगा कि यह पुरुष बड़ा धर्मात्मा है, खूब दान देता है, पुण्य कमाता है, मर कर स्वर्ग में देव होगा; या यह पुरुष जीवों को सताता है, चोरी करता है, दगाबाज है, पापी है, इसकी दुर्गति होगी, मर कर नरक जायगा। संसार में इस जीव की सदा एक-सी दशा नहीं रहती। इसके कर्मों के अनुसार इसकी उच्च और नीच अवस्था होती है। इस प्रकार संसारी जीवों के ठहरने के स्थान को अथवा जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं।

गतियाँ चार होती हैं—

तिर्यंच गति, नरक गति, मनुष्य गति और देव गति।

तिर्यंच गति

एकेन्द्रिय वृक्षादि से लेकर पंचेन्द्रिय तिर्यंच (पशु-तक) तिर्यंच गति में कहलाते हैं, अर्थात् एकेन्द्रिय जीव पशु

पक्षी, कीड़े मकोड़े, मगर-मच्छ इत्यादि तिर्यंच हैं। जब कोई जीव मरकर इनमें जन्म लेते हैं तो उनको तिर्यंच कहते हैं। इस गति में पाचों ही इन्द्रियों के जीव पाये जाते हैं। इस गति में भूख प्यास, गर्मी सर्दी, बध-बन्धन, मारन-ताडन आदि के अनेक दुख भोगने पड़ते हैं। झूठ, दगा, धाजी वगैरह करने से इस गति में जन्म लेना पड़ता है।

नरक गति

इस पृथ्वी के नीचे सात नरक हैं। उन नरकों में एक समय मात्र सुख नहीं मिलता। वहाँ बड़ा भारी दुःख है। उनमे रहने वाले जीवों का भूख प्यास; छेदन भेदन आदि के अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं इन नरकों में जब पशु व मनुष्य मर कर जन्म लेता है तो उसे नारकी कहते हैं। इस गति में जीव पचेन्द्रिय सैनी ही होते हैं। इनके शरीर बड़े बेडौल और दुर्गन्धमय होते हैं। जो जीव बड़े बड़े आरम्भ करते हैं, मदिरा पान करते हैं, मास भक्षण करते हैं, अथवा तीव्र हिंसादिक घोर पाप करते हैं, वे नरक में जाते हैं।

मनुष्य गति

जब कोई जीव मरकर मनुष्य का शरीर धारण करे तो उसे मनुष्य कहते हैं। मनुष्य गति के जीव पचेन्द्रिय

सैनी ही होते हैं। थोड़ा आरम्भ और थोड़ा परिग्रह रखने से तथा सन्तोष से जीवन बिताने से मनुष्य गति में जन्म होता है।

देव गति

ऊपर लिखे तीन प्रकार के जीवों के सिवाय एक प्रकार के जीव और होते हैं, इनको अच्छे भोग व सुखदाई पदार्थ मिलते हैं। ये रात दिन सुख में मग्न रहते हैं। जो जीव मरकर देव गति में जन्म लेता है उस को देव कहते हैं। इस गति के जीव पंचेन्द्रिय सैनी होते हैं। पूजा-दान, व्रत-उपवास आदि शुभ कर्म करने से देव गति में जन्म होता है।

इन चारों गतियों में सबसे उत्तम मनुष्य गति है। मनुष्य गति में ही यह जीव चारित्र धारण कर मोक्ष पा सकता है। इस लिए मनुष्य जीवन पाकर धर्म सेवन कर के अपनी आत्मा का कल्याण अवश्य करना चाहिए।

प्रश्नावली

१—गति किसे कहते हैं और गति कितनी होती हैं, नाम बताओ?

२—तिर्यंच गति में क्या क्या दुःख देखने में आते हैं?

३—बताओ नरक कहाँ पर हैं और ये कितने होते हैं? यह भी बताओ कि कौन से काम करने से ये नरक गति मिलती है?

४—तुम इन चारों गतियों में से किस गति को अच्छा समझते हो और क्यों?

५—नरक गति और देव गति के जीवों के कितनी कितनी इन्द्रियाँ होती हैं ?
६—एक कुत्ता मर कर घोड़ा बना, बताओ वह पहले कौनसी गति में था ? अब कौनसी गति में है ?
७—निम्न लिखित जीव कौनसी गति में हैं ?
चिऊंटी, बन्दर, वृक्ष, लड़की, कुत्ता, बिल्ली और औरत।

पाठ ३—वीर बालक निकलंक

आज से क़रीब बारह सौ वर्ष पहले की बात है। तब दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म का बहुत प्रचार था। बौद्ध गुरु सर्वत्र अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे और जैन धर्म से द्वेष रखते थे। बौद्ध विद्यालयों में जैनधर्मी बालकों का शिक्षा पाना असम्भव था। ऐसे कठिन समय में दो वीर बालकों को अपने प्यारे जैन धर्म की सुधि आई। उन्होंने जैन धर्म का उद्योत करने की प्रतिज्ञा कर ली। इन बालकों का नाम अकलंक और निकलंक था। ये दोनों सगे भाई थे और एक राजमन्त्री के होनहार पुत्र थे धर्म को प्रकाश में लाने का निश्चय करके वे अपने घर से निकल पड़े और एक बौद्ध विद्यालय में जाकर (अपने को जैनी न बता कर) अध्ययन करने लगे, क्योंकि उनको बौद्ध ग्रन्थ पढ़ने थे।

दोनों भाई बड़े बुद्धिमान् थे। थोड़े ही दिनों में वे दोनों सिद्धांत और न्याय शास्त्र के धुरन्धर विद्वान हो गये। नौबत

यहा तक पहुची कि वे अपने गिक्षकों की बात काटने लगे। उनकी युक्ति को सुनकर वे दग रह जाते थे। बौद्ध गुरुओं को सशय हुआ, हो न हो ये जैन हैं। उन्होंने उनको जैन प्रमाणित करने के कई उपाय किए परन्तु वे असफल रहे। अन्त मे उनकी एक युक्ति चल गई। रात्रि को अचानक बड़े जोर की आवाज की गई, जिसको सुनकर सब बालक चौंक पड़े और 'बुद्धदेव" की याद करने लगे। अकलंक और निकलक तो जैन धर्म के परमश्रद्धानी थे। उनके मुंह से अनायास "अर्हन" शब्द निकल पड़ा। ये पकड़े गये दोनों भाई एक कोठरी में बन्द कर दिए गए।

दोनों भाइयों ने सोचा 'यह बहुत बुरा हुआ दिल की दिल म रह गई। अब जैन धम का उत्कर्ष कैसे होगा?, आखिर एक बात उनकी समझ में आई। वे खिड़की से कूद कर भागे। सवेरा होते होते वे बहुत दूर निकल गये। सवेरे जब दोना को कारागृह में न पाया तो झट चारों ओर हथियार बन्द घुड़सवारों को उनकी खोज में दौड़ाया गया।

अभी अकलङ्क और निकलङ्क किसी सुरक्षित स्थान पर नहीं पहुँचे थे, वे सरपट रास्ता तय कर रहे थे कि उन्हें घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई दिया। वे ताड़ गये, हो न हो बौद्ध लोग आ रहे हैं। उन्हें अपनी रक्षा का कोई उपाय न दिखाई दिया, हठात् छोटे भाई निकलङ्क

ने बड़े भाई से तालाब में छिप कर जान बचाने को कहा परन्तु बड़ा भाई छोटे को सकट में डालने को तैयार न था। निकलङ्क उनके पैरों गिर पड़ा और बोला भैया! अब मेरा मोह मत करो बेशक यह आप का कर्तव्य है कि मुझे नष्ट न होने दो, किन्तु आप भूलते हैं। इससे भी बढ़कर मेरा और आप दोनों का समान कर्तव्य है 'जैन धर्म फैलाना' पर मुझ में आपके समान ज्ञान और तेज नहीं है। आप धर्मोद्योत के लिये जाइये और अपने प्राणों की रक्षा कीजिये। धर्म के लिये मेरा यह नश्वर शरीर काम आये इससे बढ़कर मेरा सौभाग्य और क्या होगा'?

बड़े भाई ने धर्मोद्योत के लिये छोटे भाई की बात मान ली। वे तालाब में जाकर छिप रहे। उधर निकलङ्क आगे बढ़े उनका एक पथिक से साथ हो गया देखते ही देखते हथियार बन्द घुड़सवार उन पर आ धमके और दोनों को पकड़ कर मार डाला। निकलङ्क धर्म के लिये शहीद हो गये।

वीर अकलङ्क ने मुनि होते हुए धर्म फैलाना शुरू कर दिया। एक बार वह राजा हिमशीतल के दरबार में पहुँचे और वहाँ बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ किया जिसमें अकलङ्क ने विजय पाई और जैन धर्म का प्रभाव फैला।

वहाँ के लोगों को जैन बनाया। उन्होंने राजवार्तिक आदि बहुत से जैन ग्रंथ लिखे। ये न्याय शास्त्र के बड़े धुरन्धर विद्वान् थे।

बालको! धर्म प्रभावना के लिये प्रत्येक को अपनी शक्ति अनुसार काम करना चाहिये। परन्तु यह न भूलना कि किसी पर अत्याचार करना धर्म नहीं है, जीवमात्र की भलाइ करना और सदैव सच्चा सादा जीवन बिताना यही धर्म है।

लड़को! तुम ऐसा धर्म कार्य करने के लिए सदा उद्यत रहो। धर्म को अपने प्राणों से भी बढ़कर समझो। धर्म के लिये प्राण दे देना बड़ा भारी धर्म है।

जो भी अकलङ्क और निकलङ्क के समान अपना जीवन धर्म के लिये अर्पण करते हैं वे अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

प्रश्नावली

१—बौद्ध धर्म को चलाने वाले कौन थे?
२—अकलङ्क और निकलंक को बौद्धधर्म का क्या क्या कठिनाइयाँ उठानी पड़ी?
३—अर्हन् शब्द से तुम क्या समझते कैसे मालूम किया कि अकलंक
४—निकलङ्क ने अपने प्राण क्यों ने अ—श किया या प्राणों म

पाठ ४—जिन वाणी स्तुति

सवैया २३

(१)

वीर हिमाचल तैं निकसी, गुरु गोतम के मुख कुंड ढरी है,
मोह महाचल भेद चली, जग की जड़ता तप दूर करी है।
ज्ञान पयोदधि माहि रली, बहु भंग तरंगनि सों उछरी है,
ता शुचिशारद गङ्ग नदी प्रति, मैं अंजुली निज शीश धरी है॥

(२)

या जग मंदिर में अनिवार, अज्ञान, अंधेर छयो अति भारी,
श्री जिनकी धुनि दीप शिखासम, जो नहि होत प्रकाशन हारी॥
तो किह भाँति पदारथ पाँति, कहा लहते रहते अविचारी,
या विधि संत कहें धन हैं, धन हैं जिन बैन बड़े उपकारी॥

दोहा—जा वाणी के ज्ञान तें, सूझे लोका लोक।
सो वाणी मस्तक चढ़े, नित प्रति देवहुँ धोक॥

प्रश्नावली

१—जिन वाणी से तुम क्या समझते हो?
२—जिन वाणी के पढ़ने से क्या लाभ होता है?
३—जिन वाणी की स्तुति पढ़ो?

पाठ ५—अजीव द्रव्य [अ]

पहले भाग में तुम पढ़ चुके हो कि जिसमें चेतना

अर्थात् जानने देखने की शक्ति न हो उसे अजीव कहते हैं। अजीव पाँच प्रकार क होते हैं।

पुद्गलास्तिकाय, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल।

पुद्गल—जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध, और वर्ण पाये जायें उसे पुद्गल कहते हैं। ये चारों गुण प्रत्येक पुद्गल में एक साथ रहते हैं जैसे एक आम म कोमल स्पर्श है, मीठा रस है, अच्छी गन्ध है और पीला वर्ण है।

यह गुण पुद्गल क सिवाय और किसी द्रव्य में नहीं पाये जाते हैं।

पुद्गल के गुण

स्पर्श—उसे कहते हैं जो स्पर्शन इन्द्रिय या छूने से जाना जाय। स्पर्श आठ प्रकार का होता है। ठंडा, गर्म रूखा, चिकना, कड़ा, नरम, हल्का, भारी।

जैसे पानी ठण्डा, आग गर्म, बालू रूखी, घी चिकना, पत्थर कड़ा, मखमल नरम, रुई हल्की और लोहा भारी होता है।

रस—उसे कहते हैं जो रसना (जिह्वा) इन्द्रिय से जाना जाय। रस पाँच प्रकार का होता है—खट्टा, मीठा, कड़ुवा, चर्परा, कषायला।

जैसा नीम्बू खट्टा, पेड़ा मीठा, नीम कडुवा, मिर्च चरपरी हरड़ कषायल होती है।

गंध—उसे कहते हैं जो घ्राण (नासिका) इन्द्रिय द्वारा जाना जाय। गंध दो प्रकार का है-सुगन्ध (खुशबू) दुर्गन्ध (बदबू)।

जैसे गुलाब के फूल में सुगन्ध और मिट्टी के तेल में दुर्गन्ध आती है।

वर्ण—उसे कहते हैं जो चक्षु (आँख) इन्द्रिय से जाना जाय। वर्ण पाँच प्रकार का होता है-काला, पीला, नीला, लाल सफेद। जैसे कोयला काला, सोना पीला, मोर का पंख नीला, गेरू लाल और चाँदी सफेद होती है।

इन रंगों में से एक दूसरे के मिल जाने से और भी अनेक प्रकार के रंग बनते हैं, जैसे नीला पीला मिलाने से हरा रंग बनता है।

इस प्रकार स्पर्श आठ, रस पांच, रूप पांच, गंध दो सब मिलकर पुद्गल के बीस गुण होते हैं।

पुद्गल के भेद—पुद्गल दो प्रकार का है—

परमाणु—उस छोटे से छोटे टुकड़े को कहते हैं जिसका और दूसरा टुकड़ा न हो सके।

स्कंध—दो या दो से अधिक मिले हुए पुद्गल

क परमाणुओं को स्कंध कहते हैं। स्कंध अनेक तरह के हैं।

प्रश्नावली

१—पुद्गल किसे कहते हैं? चार पुद्गल द्रव्यों के नाम लेकर बताओ कि पुद्गल में कितने व कौन कौन से गुण होते हैं?
२—गुलाब के फूल की सुगन्ध तुम कौन सी इन्द्रिय से जानते हो?
३—वर्ण कितने प्रकार के हैं? किसी वस्तु का वर्ण जानने में तुम अपनी कौनसी इन्द्रिय से काम लोगे?
४—परमाणु और स्कंध में क्या भेद है?
५—जिस वस्तु में रूप और रस होते हैं उनमें स्पर्श और गन्ध होंगे या नहीं? यदि होंगे तो क्या, कारण बताओ?
६—किसी ऐसी वस्तु का नाम बताओ, जिसमें स्पर्श पाया जाय किन्तु रस गन्ध व वर्ण न पाये जायँ?
७—स्पर्श और रस में भेद भिन्न भिन्न बताओ।

पाठ ६—अजीव द्रव्य (आ)

अजीव के पाँच भेदों में से पुद्गल पहिले बता चुके हैं, शेष द्रव्यों को अब बताते हैं।

धर्मास्तिकाय—उसे कहते हैं जो स्वयं चलते हुए जीव और पुद्गलों को चलने में उड़ाने में उदासीन रूप से मदद दे। जैसे, जल मछली को चलने में, हवा पतंग उड़ाने में सहायक होती है। यह द्रव्य एक है और तमाम लोकाकाश में पाया जाता है, और अरूपी होने के कारण आँखों से दिखाई नहीं पड़ता।

अधर्मास्तिकाय—उसे कहते हैं जो स्वयं ठहरते हुए और पुद्गलों को उदासीन रूप से ठहरने में मदद दे। जैसे थके हुए मुसाफिर को पेड़ की छाया ठहरने में सहायक होती है यह पदार्थ भी एक है और तमाम लोक में पाया जाता है। अरूपी होने के कारण आँखों से नहीं दिखाई पड़ता।

धर्मास्तिकाय—अधर्मास्तिकाय जीव पुद्गल को प्रेरणा करके चलाते व ठहराते नहीं हैं। परन्तु जब वे चलते या ठहरते हैं तब उनकी मदद अवश्य करते हैं। बात यह है कि धर्मास्तिकाय न हो तो हम चल फिर नहीं सकते, और अधर्मास्तिकाय नहीं हो तो हम ठहर नहीं सकते।

(यहाँ धर्म से पुण्य और अधर्म से पाप नहीं समझना चाहिए।)

आकाश—आकाश उसे कहते हैं जो सब चीजों को जगह दे अर्थात् जिसमें सब चीजें रह सकें। यह एक अखण्ड और अनन्त द्रव्य है।

आकाश के दो भेद है—लोकाकाश और अलोकाकाश

लोकाकाश—आकाश में जहाँ तक पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल और जीव ये छः द्रव्य पाये जायें उतने आकाश को लोकाकाश कहते हैं।

आलोकाकाश—लोक के बाहर बचे हुए अनन्त आकाश को अलोकाकाश कहते हैं।

काल—जो द्रव्य की हालतों के बदलने मे मदद दे उसे काल कहते हैं।

व्यवहार में पल, घड़ी, दिन, महीना, वर्ष को व्यवहार काल कहते हैं। यह निश्चय काल की पर्याय है। निश्चय काल कालाणु को कहते हैं जो सर्व लोक में रत्नों की राशि के समान भरे हुए हैं।

पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल और जीव ये छः द्रव्य हैं। इनमें काल को छोड़ कर पाँच द्रव्य कायवान होने से पंचास्तिकाय कहलाते हैं।

काल द्रव्य कायवान नहीं है क्योंकि उसका एक २ अणु (हिस्सा) अलग अलग है। शेष पांच द्रव्य एक अणु से अधिक जगह घेरते हैं। इन छहों द्रव्यों में से पुद्गल रूपी हैं, शेष पांच अरूपी हैं।

प्रश्नावली

१—धर्म द्रव्य किसे कहते हैं और उसका क्या काम है? यदि धर्म द्रव्य नहीं होता तो तुम्हारी क्या हानि होती।

२—अधर्म द्रव्य का क्या स्वरूप है? कोई दृष्टान्त देकर समझाओ कि जीवों के लिए अधर्म द्रव्य क्या, किस प्रकार कार्य करता है?

३—आकाश के कितने भेद हैं? बताओ अलोकाकाश में कौन २ से द्रव्य पाये जाते हैं।

४—काल किसे कहते हैं? और वह कितने प्रकार के हैं? व्यवहार काल से तुम क्या समझते हो?

५—पचास्तिकाय द्रव्यों के नाम बताओ और यह भी बताओ कि इनका नाम पचास्तिकाय क्यों पड़ा?

६—रूपी अरूपी से तुम क्या समझते हो? बताओ छहों द्रव्यों में से कौन कौन से द्रव्य रूपी हैं और कौन कौन से द्रव्य अरूपी हैं?

पाठ ७—प्रार्थना

मुझे है स्वामी उस बल की दरकार

अड़ी खड़ी हों अमित अड़चनें, आड़ी अटल अपार।
तो भी कभी निराश निगोड़ी, फटक न पावे द्वार ॥१॥
सारा ही संसार करे यदि, दुर्व्यवहार प्रहार।
हटे न तो भी सत्यमार्ग-गत, श्रद्धा किसी प्रकार ॥२॥
धन वैभव की जिस आँधी से, अस्थिर सब संसार।
उससे भी न कभी डिग पावे, मन बन जाय पहार ॥३॥
असफलता की चोटों से नहिं, दिल में पड़े दरार।
अधिकाधिक उत्साहित होऊँ, मानूँ कभी न हार ॥४॥
दुःख-दरिद्रता कृत अतिश्रम से, तन होवे बेकार।
तो भी कभी निरुद्यम हो नहिं, बैठूं जगदाधार ॥५॥
जिसके आगे तन बल धन-बल, तृणावत् तुच्छ असार।
महावीर जिन! वही मनोबल, महा महिम सुखकार ॥६॥

(पं० नाथूलाल प्रेमी)

प्रश्नावली

१—कवि को किस बात की दरकार है?
२—यदि आपके रास्ते में अड़चन आ जायें तो आप क्या करेंगे?
३—दुर्व्यवहार की दशा में भी मनुष्य को किस मार्ग पर चलना चाहिये?
४—इस कविता के रचयिता का संक्षिप्त परिचय दो।

पाठ ८—सच्चे देव, शास्त्र, गुरु

सच्चा देव

सच्चा देव उसे कहते हैं जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो।

वीतरागी—उसे कहते हैं जो किसी से राग तथा द्वेष न करता। उसमें नीचे लिखे अठारह दोष नहीं होते।

दोहा—जन्म जरा तिरखा क्षुधा, विस्मय आरत खेद।
रोग शोक मद मोह भय, निन्द्रा चिन्ता स्वेद॥
राग द्वेष अरु मरण जुत ये, अष्टादश दोष।
नहीं होत अरहन्त के, सो छवि लायक मोष॥

अर्थ—अरहन्त भगवान को सच्चा देव कहते हैं। उनके जन्म, बुढ़ापा, प्यास भूख, आश्चर्य, दुःख, खेद, रोग, शोक घमंड, मोह, भय, नींद, चिन्ता, पसीना, राग द्वेष और मरण, ये अठारह दोष नहीं होते हैं।

सर्वज्ञ—उसे कहते हैं। जो संसार में जो कुछ पहले हो चुका है, अब हो रहा है और आगे होने वाला है, उस सबको हर समय प्रत्यक्ष जाने। सब पदार्थों और उनकी सब दशाओं को हर समय जानने वाले को सर्वज्ञ कहते हैं।

हितोपदेशी—उसे कहते हैं। जो सब जीवों के हित का उपदेश दे।

जिस देव में सर्वज्ञपन, वीतरागी पन और हितोपदेशीपन ये तीन गुण पाये जाँय, उसे सच्चा देव कहते हैं। अरहन्त तीर्थंकर, जिनेन्द्र, परमात्मा, परमेश्वर आदि उसके अनेक नाम हैं।

सच्चा शास्त्र

सच्चा शास्त्र, उसे कहते हैं जो सच्चे देव का कहा हुआ हो। जिसमें किसी प्रकार का विरोध न हो, जिसका कभी खंडन न हो सके, जो खोटे मार्ग का नाश करने वाला हो। जिसके पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने से जीवों का कल्याण हो और जो सबका हितकारक हो।

इसको जिनागम, जिनवाणी और सरस्वती भी कहते हैं।

सच्चा गुरु

सच्चा गुरु-उसे कहते हैं जो पाँचों इन्द्रियों के विषयों में से किसी की चाह न रखता हो, कोई आरम्भ न करता

हो, अपने पास में कोई परिग्रह न रखता हो, ज्ञान ध्यान तप में सदा लीन रहता हो और हिंसादि पांच पापों का सर्वथा त्यागी हो।

ऐसे गुरु को साधु मुनि, यति, तपस्वी आदि भी कहते हैं।

नोट—यहाँ गुरु शब्द से स्कूल तथा पाठशालाओं में पढ़ाने वाले अध्यापक तथा शिक्षक न समझना चाहिए, वे केवल विद्या गुरु हैं।

बालको! इस सच्चे देव शास्त्र, गुरु के स्वरूप को जानकर सदा उनकी भक्ति पूजन सेवा करनी चाहिए।

रागी, द्वेषी, संसारी देवों तथा गुरुओं को कभी नहीं पूजना चाहिए और आचरण बिगाड़ने वाले, विषय कषाय बढ़ाने वाले, खोटे शास्त्रों को नहीं पढ़ना चाहिये। जैन मन्दिरों में जो पद्मासन और खड्गासन जैन मूर्तियाँ होती हैं। वे सच्चे देवकी होती हैं। मूर्तियों के दर्शन से अरहन्त का स्वरूप झलकता है।

प्रश्नावली

१—सच्चे देव में क्या २ विशेष गुण होते हैं?
२—अठारह दोषों के नाम बताओ। ये किसमें नहीं पाये जाते हैं?
३—सर्वज्ञ किसे कहते हैं? अरहन्त भगवान सर्वज्ञ हैं या नहीं?
४—सच्चे शास्त्र का लक्षण बताओ। सच्चे शास्त्र को और किन नामों से पुकारते हैं? जिस शास्त्र में माँस खाना व शराब पीना अच्छा बतलाया गया है, वह सच्चा शास्त्र है या नहीं?

५—सच्चे गुरु का क्या लक्षण है? सच्चे गुरु कौन हैं? स्कूल में पढ़ने वाले शिक्षक सच्चे गुरु हैं या नहीं?

पाठ ६—श्रीमती राजुल देवी

श्रीमती राजमती या राजुल देवी जूनागढ़ के राजा उग्रसेन की पुत्री थी। बालकपन से इनका लालन पालन बड़ी योग्यता से हुआ था। ये बड़ी सुशील, गुणवती और रूपवती थीं। इतने थोड़े समय में सब विद्यायें सीख लीं जैन धर्म की शिक्षा भी उसे उत्तम रीत से दी गई थी।

युवती होने पर इनका सम्बन्ध शौरीपुर के यदुवंशी राजा समुद्रविजय और रानी शिवादेवी के पुत्र बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिप्रभु के साथ निश्चित हुआ। नेमिप्रभु उस समय भूमण्डल में सबसे श्रेष्ठ, बलवान्, धीरवीर शान्त स्वभावी और पराक्रमी राजकुमार थे। ऐसे गुणवान पति के प्राप्त होने की आशा से राजमती के हर्ष का ठिकाना न रहा।

दोनों ओर से ब्याह की तैयारियाँ होने लगीं। नियत तिथि पर बारात धूमधाम के साथ जूनागढ़ पहुँची। उस समय राजमती अपने महल के झरोखे में बैठी हुई पति के गुणों का विचार कर बड़ी प्रसन्न हो रही थीं।

जब बारात नगर में प्रवेश करने लगी तब श्रीनेमिप्रभु ने मार्ग में बाड़े में घिरे और चिल्लाते हुए बहुत से पशुओं को देखा। परम दयालु भगवान ने रथ रुकवाया। सारथी से इस भयानक दृश्य का कारण पूछा। उत्तर में सुनकर कि बारात में आये हुए मांसाहारी राजाओं के खाने के लिये यह पशु वध किये जायेंगे, उनका हृदय तड़प उठा। भगवान को जब यह मालूम हुआ कि उनके चचेरे भाई श्री कृष्ण ने उन्हें वैराग्य पैदा करने के लिए इन पशुओं को बन्द करा दिया था, तब प्रभु विचारने लगे कि धिक्कार है ऐसे संसार को जिसमें प्राणी राज भोग में आतुर हो कष्ट उठाते हैं। यह सोच, विषय भोगों से विरक्त हो, वे रथ से उतर पड़े और वहीं पर कंकण आदि तोड़ गिरनार पर्वत पर जा सर्व परिग्रह और वस्त्र भूषणादि छोड़ मुनि हो गये और आत्म ध्यान में मग्न हो तपस्या करने लगे।

ज्योंही यह खबर राज महल में पहुँची, वहां खलबली मच गई। सब के मुँह पर उदासी छा गई। उधर जब यह चर्चा राजमती ने सुनी, तो उसके हृदय पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। कहां तो वह परम हर्ष और कहाँ यह विपत्ति का पहाड़।

राजमती को सब कुटुम्बीगण समझाने लगे। सब ने चाहा कि इसके मन से श्री नेमिप्रभु के वियोग का दुःख

भुला दिया जाय। माता ने मोह के वश होकर अनेक प्रकार से राजुल देवी को शिक्षा दी कि 'हे पुत्री! श्रीनेमिनाथ का साथ छूटने की कुछ चिन्ता न करो, उनके साथ तुम्हारा पाणिग्रहण तो हुआ नहीं था, उससे भी अधिक रूपवान और गुणवान वर तुम्हारे लिये ढूँढ लिया जायेगा।' राजुल कुमारी ने उत्तर दिया 'माता जी ऐसे वचन न कहिये।' मैं तो अन्तरङ्ग में सम्बन्ध के समय ही अपने आप को सर्व प्रकार से श्री नेमिप्रभु को अर्पण कर चुकी हूँ, उनके सिवाय और कोई मेरा पति नहीं हो सकता। मुझे भोग सामग्रियों की कुछ अभिलाषा नहीं है। मैं भी श्री नेमिनाथ के समान गिरनार पर्वत पर जा कर अपना आत्म कल्याण करूँगी। ऐसा निश्चय कर राजुल समस्त कुटुम्बियों से विदा ले, संसार और शरीर का मोह छोड़, आर्यिका बन गिरनार पर्वत की गुफा में तप करने लगी।

इधर तपश्चरण करते करते श्री नेमि प्रभु को केवल ज्ञान हो गया। वे अरहन्त हो गये, और उनके ज्ञान में लोक-अलोक स्पष्ट दिखाई देने लगे। इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने भगवान का समवशरण बनाया। सब जगह के भव्य जीव समवशरण में भगवान के उपदेश सुनने आये। भगवान की सभा में राजमती छः हजार आर्यिकाओं की गुरानी हुई।

मर्वज्ञ सर्मोपदेश कर कुछ काल बाद श्री नेमि प्रभु निर्वाण पधारे। राजुल भी अपने तप के फल से स्वर्ग में अमर इन्द्र हुई।

धन्य है श्री मती राजुल देवी का साहस, पति प्रेम और धर्माचरण।

प्रश्नावली

१—राजुल देवी कौन थी और इसका विवाह किसके साथ होना निश्चित हुआ था।

२—मार्ग में पशुओं को किसने तथा क्यों बन्द करा दिया था?

३—नेमि प्रभु के वैराग्य का कारण बताओ?

४—नेमि प्रभु के वैराग्य लेने के बाद राजुल देवी ने क्या किया?

५—राजुलमती का विवाह नेमि प्रभु के साथ हुआ ही नहीं था, फिर राजुल देवी नेमि प्रभु के साथ क्या गिरनार पर्वत पर चली गई?

६—गिरनार पर्वत पर जा कर नेमि प्रभु तथा राजुल देवी ने क्या किया तथा उसका क्या परिणाम हुआ?

७—गिरनार पर्वत कहाँ है?

पाठ १०—आलोचना पाठ

वन्दों पाचों परमगुरु, चौबीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना, शुद्ध करन के काज॥१॥
सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निवृत्ति काज, तुम शरण लही जिनराज॥

ईक बे ते चौ इन्द्री था, मन. रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहीं करुणा धारी, निर्दय व्है घात विचारी ॥३॥
समरंभ समारम्भ, आरम्भ, मन वच तन कीने प्रारम्भ।
कृत कारित मोदन करिके, क्रोधादि चतुष्टय धरिके ॥४॥
शत आठ जु इन भेदनितें, अघ कीने परछेदनतें।
तिनकी कहुँ कौलों कहानी, तुम जानत केवल ज्ञानी ॥५॥
विपरीत एकान्त विनय के, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतें नहिं जात कहाने ॥६॥
कुगुरुन की सेवा कीनो, केवल अदया कर भीनी।
या विधिमिथ्यात बढ़ायो, चहुँगति में दोष उपायो ॥७॥
हिंसा पुनि झूठ जू चोरी, पर वनिता सों दृग जोरी।
आरम्भ परिग्रह भीने, मन पाप जु या विधि कीने ॥८॥
स्पर्शन रसना घ्रानन को, दृग कान विषय सेवन को।
बहु कर्म किये मन माने, कुछ न्याय अन्याय न जाने ॥९॥
फल पंच उदम्बर खाये, मधु मांस मद्य चित चाये।
नहीं अष्ट मूल गुन धारे, सेये कुविसन दुखकारे ॥१०॥
दुई बीस अभख जिन गाये, सो भी निशिदिन भुंजाये।
कछु भेदा भेद न पायो, ज्यों त्यों कर उदर भरायो ॥११॥
अनंतानुबंधी सो जाने, प्रत्याख्यान अप्रत्याख्याने।
सञ्ज्वलन चौकड़ी गुनये, सब भेद जो षोडश सुनियें ॥१२॥
परिहास अरति रति सोग, भय ग्लानि तिवेद संजोग।

पन बीस जु भेद इम, इनके वश पाप किए हम ॥१३॥
निद्रावश शयन कराया, सुपने मधि दोष लगाया ।
फिर जागि विषय वन धायो नाना विधि विषफल खायो ।१४।
आहार विहार निहारा, इनमें नहिं जतन विचारा ।
बिन देखे धरा उठाया, बिन शोधा भोजन खाया ॥१५॥
तब ही प्रमाद सतायो, बहु विधि विकल्प उपजायो ।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्या मति छाय गई है ।१६॥
मर्यादा तुम ढिंग लीनी ताहू में दोष जु कीनी ।
भिन्न भिन्न अब कैसे कहिये, तुम ज्ञान विषें सब पइये ॥१७॥
हा !हा ! मैं दुष्ट अपराधी, त्रस जीवन राशि विराधी ।
थावर की जतन न कीनी, उर में करुणा नहीं लीनी ॥१८॥
पृथ्वी बहु खोद कराई, महलादिक जागां चिनाई ।
बिन गाल्यो पुनी जल ढोल्यो, पंखा तैं पवन बिलोल्यो ।१९
हा !हा !! मैं अदयाचारी, बहु हरित जु काया विदारी ।
या विधि जीवन के खंदा, हम खाये धार आनन्दा ॥२०॥
हा ! हा !! परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई ।
ता मध्य जीव जे आये, तेहू परलोक सिधारे ॥२१॥
बींधो अन राति पिसायो, ईंधन बिन शोध जलायो ।२२।
जल छाना जिवानी कीनी, सोहू पुनि डारी जु दीनी ।
नहिं जल थानक पहुँचाई, किरियाबिन पाप उपाई ॥२३॥
जल मल मोरिन गिरवायो, कृमि कुल बहुघात करायो ।

नदियन बिच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये ॥२४॥
अन्नादिक शोध कराई, ता मध्य जीव निसराई।
तिनको नहीं जतन करायो, गरियारे धूप डरायो ॥२५॥
पुनि द्रव्य कमावन काजै, बहु आरम्भ हिंसा साजे।
किये अघ तिसनावश भारी, करुणा नहिं रंच विचारी ॥२६॥
इत्यादिक पाप अनन्ता, हम कीने श्री भगवन्ता।
सन्तति चिरकाल उपाई, वाणी ते कही न जाई ॥२७॥
ताको जु उदय अब आयो, नाना विधि मोहि सतायो।
फल भुन्जत जिय दुख पावे, वचतें कैसे करि गावे ॥२८॥
तुम जानत केवल ज्ञानी, दुख दूर करो शिव थानी।
हम तो तुम शरण लही है, जिन तारण विरद सही है ॥२९
एक ग्राम पति जो होवे सो भी दुखिया दुख खोवे।
तुम तीन भुवन के स्वामी, दुख मेटो अन्तरयामी ॥३०॥
द्रोपदि के चीर बढ़ायो, सीता प्रति कमल रचायो।
अजन से किये अकामी दुख मेटो अन्तरयामी ॥३१॥
मेरे अवगुन न चितारो, प्रभु अपना विरद निहारो।
सब दोष रहित कर स्वामी, दुख मेटो अन्तरयामी ॥३२॥
इन्द्रादिक पद नाहिं चाहूं, विषयन में नाहिं लुभाऊँ।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निज पद दीजे ॥३३॥
दोहा दोष रहित जिन देवजी, निज पद दीजे मोय।
सब जीवन को सुख बढ़े, आनन्द मङ्गल होय ॥३४॥

अनुभव माणिक पारखी, जौहरि आप जिनन्द।
ये ही वर मोहिं दीजिये, चरण शरण आनन्द ॥३५॥

प्रश्नावली

१—आलोचना किसे कहते हैं ? यह पाठ क्या पढ़ा जाता है ?
२—१०८ पाप कौन से हैं ? भली प्रकार समझाओ।
३—मिथ्यात्व मूल गुण, अभक्ष्य, व्यसन व कषाय कितने हैं ? नाम भी बताओ।
४—जल छान कर जिवानी का क्या करना चाहिये ?
इत्यादिक पाप अनन्ता यहाँ से तीन छन्द पढ़ो।
५—अनाज किस समय और किस प्रकार पीसना चाहिये ?
६—सीता, द्रौपदी और अंजन चोर के विषय में तुम क्या जानते हो ? संक्षिप्त कहानी सुनाओ।
७—नीचे लिखे छन्द पढ़ो—
समरंभ०००००। हा हा मैं
अनुभव माणिक । दोष रहित ।

पाठ ११

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र

—×○×—

सम्यग्दर्शन

सच्चे देव, सच्चे गुरु, सच्चे शास्त्र तथा दयामय धर्म का सच्चे दिल से श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन कहलाता है।

सम्यग्दर्शन धर्म रूपी पेड़ की जड़ है। जैसे जड़ के बिना पेड़ नहीं ठहरता, वैसे ही सम्यग्दर्शन के बिना सब धर्म-कर्म व्यर्थ है, उनसे कुछ लाभ नहीं होता। इस लिये आत्म कल्याण के लिए सबसे पहले सम्यग्दर्शन का धारण करना जरूरी है। सम्यग्दर्शन की बड़ी महिमा है। जिस जीव को सम्यग्दर्शन हो जाता है वह मर कर उत्तम देव या मनुष्य होता है। वह मर कर स्त्री नहीं होता। वह नरक भी जाता है तो पहले नरक से नीचे नहीं जाता और कीड़ा, मकौड़ा, कुत्ता, बिल्ली, इत्यादि में जन्म नहीं लेता है।

सम्यग्ज्ञान

पदार्थ के स्वरूप को ठीक-ठीक जैसे का तैसा जानना सम्यक्ज्ञान है।

सम्यग्दर्शन होने से पहले जो ज्ञान होता है वह सम्यग्ज्ञान नहीं कहलाता है, किन्तु कुज्ञान कहलाता है। परन्तु सम्यग्दर्शन होने पर वही ज्ञान सम्यग्ज्ञान कहलाता है। सम्यक्त्व से ही आत्मज्ञान और केवल ज्ञान होता है। इसलिये सम्यग्ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। वह ज्ञान सच्चे शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने, सुनने-सुनाने और उन पर विचार करने से प्राप्त होता है।

सम्यग्ज्ञान की बड़ी महिमा है। ज्ञान होने

सा मेहनत से जन्म जन्म के पाप कट जाते हैं, जो अज्ञानी जीव के करोड़ों जन्मों में भी नहीं कटते।

सम्यक्चारित्र

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह इन पांचों पापों तथा क्रोध, मान, माया लोभ, चार कषाय आदि का त्याग करना सम्यक्चारित्र है।

सम्यग्दर्शन और सम्यक्ज्ञान होने पर आत्मकल्याण के लिये **सम्यक्चारित्र** धारण करना जरूरी है।

सम्यक्चारित्र का पालन करने से जीव को स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र इन तीनों को **रत्नत्रय** कहते हैं। इन तीनों का मिलना ही मोक्ष मार्ग है अर्थात मोक्ष की प्राप्ति का उपाय है। सर्व कर्म बन्धन से छूट जाने का नाम **मोक्ष** है।

प्रश्नावली

१—सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं? सम्यग्दृष्टि जीव मर कर कहाँ नहीं जाता? बताओ सम्यग्दृष्टि जीव मर कर लकड़ी बन सकता है या नहीं?

२—सम्यग्ज्ञान का स्वरूप क्या है? बताओ सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञान हो सकता है या नहीं? सम्यग्ज्ञान की क्या महिमा है?

३—सम्यक्चारित्र किस कहते हैं ? सम्यक्चारित्र का धारण करना क्यों जरूरी है ?

४—'रत्नत्रय' किसे कहते हैं ? इसके पालने का क्या फल है ?

—*×*—

पाठ १२—सत्संगति

सङ्गत ही गुण होत है, सगत ही गुण जात।
बास फास गुड मीसरी, एक ही मोल बिकात॥

मनुष्य स्वभाव से ही एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला एक दिन भी नहीं रह सकता। मिल जुल कर बैठने रहने का नाम ही सगति है। सगति दो प्रकार की होती है, एक सत्सगति (सज्जनों की सगति) और दूसरी कुसगति (दुष्टों की सगति)।

सत्सगति जैसे सुखदायक है वैसे ही कुसगति दुख-दायक। कुसगति के प्रयोग से सिद्ध होता है जब कि कुसगति के कारण अच्छा आदमी भी बिगड जाता है।

सगत कीजे साध की, हरै और की व्याधि।
सगति तजिये नाच की, आठों पहर उपाधि॥

सगति का प्रभाव मन पर अवश्य पडता है इसलिए मनुष्य को निरालसी होकर सदा उत्तम सगति का आश्रय लेना चाहिए। सत्सगति के लिए हमें सदाचारी स्त्री व

पुरुषों के साथ रहना चाहिए। अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। विद्वानों के उपदेश सुनने चाहिए, और उनको याद रखना चाहिए, महात्माओं की सेवा भक्ति करनी चाहिए, बड़ों की विनय करनी चाहिए और छोटों के साथ अच्छा बर्ताव करना चाहिए।

कुसंगति के कारण अपयश फैल जाता है, धर्म बिगड़ जाता है, धन की हानि होती है और शरीर में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। जैसा कि किसी कवि ने कहा है—

जुआरी से गर रक्खोगे दोस्ताना,
जुआरी समझ लेगा तुमको जमाना।
अगर आग के पास बैठोगे जाकर,
तो उठोगे एक रोज कपड़े जलाकर॥

यदि कभी ऐसा समय आजाय कि परवश होकर कुसंगति में रहना पड़े तो वहां ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि जितने दुष्ट साथी हैं व सबके सब सुधर जाँय यदि ऐसा न हो सके तो कम से कम अपने आप को अवश्य बचाना चाहिये।

जहर के मिलने से लड्डू प्राणनाशक होते हैं और इलायची, बादाम आदि मेवा मिलाने से पौष्टिक हो जाते हैं। कीचड़ की संगति से कपड़े मैले हो जाते हैं, और साबुन की संगति से साफ हो जाते हैं। सत्संगति के गुण समझ

कर कुसंगति का त्याग करना लाभदायक है।

एक बार एक शिकारी ने तोते के दो बच्चे पकड़ बाजार में लाकर बेचे। एक तो किसी भले आदमी ने मोल ले लिया और दूसरा किसी बदमाश के हाथ पड़ा। दोनों ने अपने-अपने घर जाकर उनका पालन-पोषण किया। भले आदमी का तोता अच्छी अच्छी बातें सीख गया और नीच घर के तोते ने गाली गलौच आदि बुरी बातें सीखीं।

एक दिन उस नगर का राजा उस गली में से होकर निकला तो नीच तोता गाली गलौच बकने लगा। राजा को तोते की ये बातें बहुत बुरी लगीं परन्तु उसने उस समय कुछ न कहा। आगे जब वह उस भले आदमी के मकान के पास से निकला तो उसके तोते ने राजा को देख कर बड़े आदर सत्कार के वचन कहे, जिनको सुन कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। राजा ने यह भेद जानकर भले आदमी का बहुत आदर किया।

बालको! देखो दोनों तोते एक ही माँ के बच्चे थे। परन्तु संगति के प्रभाव से एक भला हो गया और दूसरा बुरा हो गया।

प्रश्नावली

१—संगति कैसी करनी चाहिए? कुसंगति से क्या-क्या हानियाँ होती हैं?

२—उदाहरण द्वारा समझाओ कि मनुष्य अच्छी संगति से अच्छा और बुरी संगति से बुरा बनता है।
—यदि कभी परवश होकर कुसंगति में रहना पड़ जाय तो क्या करना चाहिए?

—•—

पाठ १२—बालिका विनय

भगवन् सदा सुशीला श्रद्धावति बनें हम।
दोनों कुलों की शोभा लज्जावती बनें हम ॥१॥
बनवास में पति का जिसने न साथ छोड़ा।
सत् शील की विधाता सीता सती बनें हम ॥२॥
कुष्टी पति को पाकर सेवा से मुँह न मोड़ा।
वह धर्म कर्म ज्ञाता मैना सती बनें हम ॥३॥
सङ्कट सहे हजारों छोड़ा न शील लेकिन।
वह मनोरमा सुभद्रा अजना सती बनें हम ॥४॥
अपने पति को जिसने जिन धर्म पर लगाया।
वह धर्म शास्त्र ज्ञाता चेलना सती बनें हम ॥५॥
"शिवराम" भेष धर कर क्षुल्लक करी परीक्षा।
सम्यक्त्व से डिगी न वह रेवती बनें हम ॥६॥

प्रश्नावली

१—इस भजन के बनाने वाले का नाम बताओ।
२—सीता सती कौन थी? और वे बन में क्या गई थीं?
३—मैना सती का विवाह कुष्टी पति के साथ क्यों हो गया था?
४—मैना सती ने अपने पति की क्या सेवा की?

४—मनोरमा, अञ्जना, चेलना और रेवती के सम्बन्ध मे आप क्या जानते हैं ?

—:o:—

पाठ १४—श्री महावीर भगवान

बालको ! तुमने चौबीसवें तीर्थंकर श्री भगवान महावीर का नाम सुना होगा। आज से करीब अढाई हजार वर्ष पहले बिहार प्रांत के कुण्डलपुर नाम के नगर में नाथ वंशीय सिद्धार्थ राजा राज्य करते थे। इनकी स्त्री त्रिशला वैशाली के राजा चेटक की पुत्री थी। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन राजा सिद्धार्थ रानी त्रिशला के घर मे राजकुमार श्री महावीर का जन्म हुआ, देश में मङ्गल छा गया।

राजकुमार महावीर इतने पुण्य शाली थे कि उनके जन्म से ही अनूठी-अनूठी बातें होने लगीं। उन बातों को देख कर लोग उन्हें एक भाग्यवान बालक समझते थे। जैसी उनकी बुद्धि अनुपम थी वैसे ही उनका शरीर बड़ा सुन्दर और अतुल बलशाली था। कुण्डलपुर की प्रजा उनको देखकर फूले अंग न समाती थी।

जब महावीर पूरे आठ वर्ष के हुए तो उन्होंने सच बोलने, चोरी न करने तथा किसी को न सताने की प्रतिज्ञायें कर लीं। वे ब्रह्मचर्य से रहने लगे। उन्हें सादगी पसन्द थी; शौक के लिए बहुत वस्त्राभूषण रखना उन्हें

पसन्द न था। वे गिने चुने कपड़े अपने पास रखते थे। वे ऐश्वर्यवान् जरूर थे तो भी वे अच्छे अच्छे कपड़े और ज़ेवर पहनकर अपना स्वांग बनाना नहीं जानते थे, गरीब और दुखी लोगों की सेवा करना वे अपना धर्म समझते थे, यही उनका सच्चा आभूषण था।

एक रोज़ अपने साथियों के साथ वे बाग में खेल रहे थे। देखते देखते वहां एक बड़ा भयानक काला सांप आ निकला। सब लड़के घबरा गये, सबको अपने अपने प्राणों की पड़ गई। किसी को रक्षा का कोई उपाय न सूझ पड़ा। परन्तु महावीर ने हिम्मत न हारी। उन्होंने निडर होकर उस सांप को भगा दिया, अपने और साथियों को अभय बना दिया।

इसी तरह एक बार राजकुमार महावीर राजमहल में बैठे हुए थे। नगर में अचानक कोलाहल मचने की आवाज़ कानों में पड़ी। पूछने पर मालूम हुआ कि राजा का हाथी मतवाला हो रस्सी तुड़ा भागा है और लोगों को दुख दे रहा है। इतना सुनना था कि महावीर एकदम घटनास्थल पर जा पहुँचे। उन्होंने कहा 'मेरे होते हुए कुण्डलपुर की प्रजा को कष्ट नहीं हो सकता।' और हुई भी यही बात। महावीर ने बात की बात में उस हाथी को पकड़कर महावत के हवाले कर दिया। लोग बड़े प्रसन्न हुए और राजकुमार

को उन्होंने आत्म स्वतन्त्रता का संदेश सुनाया और विश्व प्रेम का झंडा फहराया। लोग आपसी भेद-भाव को भूल गए और प्रेम से रहने लगे। और कोई किसी जीव को नहीं सताता था। पशु पक्षियों का मारा जाना बन्द हो गया, सब ही प्राणी रहे प्रसन्न हुए।

तीस वर्ष तक जनता को धर्मामृत का पान कराकर तीर्थंकर महावीर पावापुर पहुँचे। वहां वे योग में स्थिर हो गये। ७२ वर्ष की आयु म मुक्त हो गये। संसार के जन्म मरण के दुखों से छूट गये। यह कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की पिछली रात्रि थी। महावीर प्रभु को मुक्त हुआ सुनकर सेठ साहूकार राजे महाराजे सब पावापुर को चलपड़े। उसी वक्त उन्होंने घी के दीपक जलाये और भगवान के गुणों का चिंतवन किया। भारत के इस महापुरुष की पवित्र याद में यह दिन राष्ट्रीय त्यौहार नियत किया गया और यह 'दीपावली' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

लड़को! तुम भी राजकुमार महावीर की तरह सादगी से रहना सीखो। सदा सब से प्रेम करो। जितनी तुमसे दूसरों की भलाई हो सके करो। मौज-शौक और स्वार्थ को कर्तव्य के सामने तुच्छ समझ, दलित और श्रम जीवों की रक्षा अपने प्राणों पर खेल कर करो और ज्ञान पाने के लिए जी जान से प्रयत्न करो। यदि तुम इतना

करोगे तो लोग तुम्हें प्यार करेंगे और वे युग युगान्तर तक तुम्हारा नाम लेते रहेंगे।

महावीर स्वामी का जन्म दिवस चैत सुदी १३ है। इस दिन उनकी वीर जयन्ती मनाओ, पूजा पाठ करो, धर्म उपदेश का प्रचार करो। जगत् भर मे न्याय, नम्रता और आत्मानुभव का सुखदाई उपदेश फैला दो।

वर्तमान के अत्यन्त प्रसिद्ध चौबीस तीर्थंकरों में करीब २५०० वर्ष हुए श्री महावीर अन्तिम तीर्थंकर हुए हैं।

प्रश्नावली

१—महावीर स्वामी का जन्म कब और कहां हुआ? महावीर स्वामी का जन्म किस वंश में हुआ? इनके माता पिता कौन थे, नाम बताओ?

२—महावीर स्वामी कौन से तीर्थंकर हैं? महावीर स्वामी को और किन नामों से पुकारते हैं?

३—महावीर स्वामी के बाल्य जीवन की घटनायें बताओ कि किस प्रकार वे दूसरों की सहायता किया करते थे?

४—कितनी आयु में महावीर स्वामी मुनि हो गये थे?

५—उन्होंने कितने दिन तक तप किया?

६—महावीर स्वामी के निर्वाण दिन को हम लोग आज तक किस रूप में मानते आ रहे हैं?

७—महावीर भगवान का क्या सन्देश था और उनकी क्या शिक्षा थी?

८—दीपावली हमें कैसे मनानी चाहिये, उस दिन क्या करना चाहिये और क्या नहीं?

पाठ १५—वीर स्तवन (भजन)

सब मिलके आज जय कहो, श्री वीर प्रभु की।
मस्तक झुकाकर जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥१॥
विघ्नों का नाश होता है, लेने से नाम के।
माला सदा जपते रहो, श्री वीर प्रभु की ॥२॥
ज्ञानी बनो दानी बनो, बलवान भी बनो।
अकलङ्क सम बनकर कहो, जय वीर प्रभु की ॥३।
होकर स्वतन्त्र धर्म की, रक्षा सदा करो।
निर्भय बनो और जय कहो, श्री वीर प्रभु की ॥४॥
तुमको भी अगर मोक्ष की, इच्छा हुई ऐ 'दास'।
उस वाणी पे श्रद्धा करो, श्री वीर प्रभु की ॥५॥

प्रश्नावली

१—इस भजन के बनाने वाले ने किस की जय मनाई है ? वे कौन थे ?
२—धर्म की रक्षा किस प्रकार करनी चाहिए ?
३—इस भजन को सुस्वर सुनाओ।
४—वीर वाणी से आप क्या समझते हैं ?

पाठ १६—सेठ के पाँच पुत्र

किसी एक वृद्ध पुरुष के पाँच पुत्र थे। वे साधारण बात पर भी आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। उनके पित

ने उन्हें बहुत प्रकार से समझाया, परन्तु उन्होंने उस पर कुछ ध्यान न दिया। तब उस वृद्ध पिता ने एक युक्ति सोची।

एक दिन उसने रस्सी से मजबूत बंधा हुआ पतली लकड़ियों का एक गट्ठा मंगवाया और प्रत्येक लड़के से उस गट्ठे को तोड़ने के लिए कहा, मगर उनमें से कोई उसे तोड़ न सका। फिर उनके पिता ने उस गट्ठे को खोल कर जुदा-जुदा लकड़ी को तोड़ने के लिए कहा, तो उनमें से हर एक लकड़ी को जुदा २ करके उन्होंने बड़ी आसानी से तोड़ डाला।

इस पर उनके पिता ने उन्हें समझाया और कहा 'जरा सोचकर देखो', एकता में कितना बल है। तुम में से हर एक कोई भी मजबूत बंधी हुई लकड़ी के गट्ठे को न तोड़ सका, परन्तु उन्हीं को जुदा २ करके तुमने इन्हें सुगमता से तोड़ डाला, इसी तरह तुमको भी यह सिद्ध होना चाहिए कि तुम आपस में बिल्कुल [illegible] कोई भी तुम्हें हानि न [illegible] में ही विरोध करोगे तो [illegible] तुम्हारा सहज ही [illegible]

अपने [illegible] हुए, और [illegible] कर सुख [illegible]

बालकों! ऐक्य सर्व शक्ति का मूल है। तुम सबको आपस में प्रेम से मिल जुलकर रहना चाहिये। जिस कुटुम्ब जाति तथा देश में फूट होती है वह निर्बल हो जाता है, उसे हर कोई दबा लेता है, वह कोई उन्नति नहीं कर सकता और उसका सहज में नाश हो जाता है।

प्रश्नावली

१—सेठ के कितने पुत्र थे? और उनको क्या आदत पड़ गई थी?

२—बूढ़े पिता ने अपने लड़कों को एकता की महिमा समझाने के लिए क्या प्रयत्न किया?

३—एकता किसे कहते हैं? आपस में मिल जुल कर रहने से क्या लाभ है।

४—बंधे हुए गट्ठे को लड़के क्यों नहीं तोड़ सके।

५—इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है।

पाठ १७—धर्म महिमा

धर्म बिन कौन उतारे पार।

धर्म करत संसार सुख, धर्म करत निर्वाण।
धर्म पंथ साधे बिना, नर तिर्यंच समान॥ टेक॥
धर्म प्रभाव मिलत है मित्रो, सुख संपति भंडार।
रोग रहित शुभ नर तन पावत, उत्तम कुल अवतार॥१॥

पुत्र हुये। धृतराष्ट्र पाण्डु, के साथ राज्य करते थे। जब धृतराष्ट्र और पाण्डवों को साथ २ राज्य का पालन करते हुए बहुत दिन हो गए तो पाण्डु को किसी कारण से वैराग्य हो आया उन्होंने उसी समय अपने राज्य के दो विभाग करके एक युधिष्ठिर आदि पाँच पाण्डवों को और दूसरा दुर्योधन आदि कौरवों को दिया और आप मुनि हो गये।

दुर्योधन आदि कौरव आधे राज्य को पाकर सन्तुष्ट न हुये, वे पाण्डवों से द्वेष करने लगे और हर समय इसी विचार में रहने लगे कि किसी प्रकार पाण्डवों का राज्य भ्रष्ट करके सारे राज्य पर अपना अधिकार जमालें। इस उद्देश्य से उन्होंने पाण्डवों को कई फन्दों में फसाना चाहा, परन्तु सफल न हुए।

एक दिन दुर्बुद्धि दुर्योधन ने कपट से पाण्डवों को सभा में बुलाया और स्नेह भरे वचनों में युधिष्ठिर से कहा—'आइये' दिल बहलाने के लिये जुआ खेलें। इस पर युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों जुआ खेलने लगे। यद्यपि दुर्योधन बड़ा चतुराई से पासा फेंकता था। परन्तु भीम की हुंकार से उसका हाथ काँप कर उल्टा गिर जाता था। यह देख दुर्योधन ने किसी काम के बहाने भीम को बाहर भेज दिया भीम के बाहर जाते बड़ा डर हो गई। इधर दुर्योधन की

बन पड़ी। उमकी जीत का पासा पड़ने लगा।

युधिष्ठिर ने पहले अपना खजाना हारा, फिर देश हारा, फिर क्रम से हाथी, घोड़े, वाहन, गाय, भैंस आदि सब वे हार गए। अन्त म उनके पास अन्तःपुर की द्रौपदी आदि स्त्रियों के जो कुछ आभूषण थे वे भी हार गये।

इतने में हुँकार करता भीम भी वहां आ पहुचा। जब उसने युधिष्ठिर को अपनी सारी सम्पत्ति को हारा हुआ और उदास देखा तो दुर्योधन की सब चाल बाजी समझ गया। जान लिया दुर्योधन ने मुझे बड़ा धोखा दिया। इससे भीम को बड़ा दुःख हुआ।

इसके बाद युधिष्ठिर दुखित होकर भीम आदि के साथ अपने घर चले गये। वे घर पहुच भी न पाये ये कि दुर्योधन ने उनके पास एक दूत भेजा। उसने आकर युधिष्ठिर को प्रणाम किया और कहा—'हे नाथ! दुर्योधन महाराज कहते हैं कि आप बारह वर्ष के लिए यहाँ से आज ही रात को चले जाँय, नहीं तो आपको कष्ट उठाना पड़ेगा। यह कह कर दूत चला गया।

इधर दुष्ट दुशासन द्रोपदी के आभूषण उतारने के लिये उसका वस्त्र खींचने लगा और बुरे शब्दों से उसका तिरस्कार किया। अर्जुन और भीम द्रौपदी के इस अप-

मान लो न मह मरू। भीम ने क्रोधित हो कर युधिष्ठर से कहा—स्वामिन् ! आज म शत्रु आ के सुन्द को जड़ से उखाड़ फेंकू ग्ना हूँ' पर युधिष्ठिर ने अपने वचन रूपी शीतल जल से उसका क्रोध शान्त कर दिया और कहा-'यह निश्चय है, चाहे जो हो पर म अपना वचन नहीं हारूँगा मेरे पराक्रमी वीरो ! अब यहाँ रहने का ख्याल छोड़ कर शीघ्र चल दो और वन में जाकर डेरा डालो। अब से हमें वन ही अपनी राजधानी बनानी होगी।'

युधिष्ठिर के इन वचनों को सुन कर द्रौपदी सहित सब भाई वन चलने को उठ खड़े हुये। राज्य सम्पदा को तृण की तरह छोड़ कर, वन में कितने ही दिनों तक मार्ग के कष्टों को सहते हुए घूमते रहे।

पाठको! जुए के समान संसार में कोई पाप नहीं। पांडवों सरीखे प्रबल प्रतापी योद्धाओं को भी जुआ खेलने से अपने देश से भ्रष्ट होकर कैसी कैसी भयङ्कर आपदायें सहनी पड़ीं। जुआ नरक का मार्ग है, दुःख रूपी सर्प का बिल है, धर्म का घातक है, सब दोषों का स्थान है, आपत्ति का समुद्र है, विवेक भुलाने वाला है। जुआ अन्य सब व्यसनों में मुख्य है। इसलिये जो सुखी रहना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सब अनर्थों के मूल जुए को दूर से ही छोड़।

प्रश्नावली

१—पाण्डव कौन थे ? और कितने थे, बताओ इनका नाम पाडव क्यों पड़ा ?

२—दुर्योधन कौन था और वह पाडवों से क्यों जलने लगा था ?

३—दुर्योधन ने पाडवों को कैसे हरा दिया ?

४—जुआ खेलने से पाडवों की क्या हानि हुई ?

५—जुआ किसे कहते हैं ? किसी काम में हारजीत लगाना जुआ है या नहीं ?

६—जुए के खेल से क्या हानियाँ होती हैं ?

७—इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

—×०×—

पाठ १९—मांसाहार का कुफल

श्रुतपुर नगर मे बक नाम का राजा रहता था। वह प्रजा का शासन करने में बड़ा चतुर था, परन्तु धर्म हीन था। उसे किसी कारण से मास खाने की आदत पड़ गई। वह अपना अधिकाश समय माम खाने के विचारों में ही बिताता था। उसका रसोइया सदा मास पका पका कर उसे देता था। यही नीच निर्दयी बक के लिए पशुओं का नित्य घात किया करता था।

एक दिन रसोइये को पशु का मास न मिला, तब वह दुष्ट मांस की खोज में निकला। श्मशान भूमि मे

किसी मरे हुए बच्चे को खोद कर ले आया। पापी ने उस बच्चे के मांस को मसाला आदि डाल कर बड़ी चतुराई से पकाया और राजा बक को खिला दिया। राजा को वह मांस बड़ा स्वादिष्ट मालूम हुआ।।

उस मांस लोलुपी राजा ने रसोइये से कहा—'ऐसा स्वादिष्ट मांस कहां से लाये हो, मैंने कभी ऐसा उत्तम मांस खाया ही नहीं'। यह सुनकर रसोइया अभयदान मांग कर डरता बोला- प्रभो' क्षमा कीजिये यह मनुष्य का मांस है। आज जब कहीं से भी पशु का मांस नहीं मिला, तब इसे चतुराई से पका कर आपको खिलाया है।

यह सुनकर राजा बोला —'यह मांस मुझे बहुत ही अच्छा मालूम हुआ है, इसलिए अब आइन्दा तुम मुझे मनुष्य का ही मांस खिलाया करो।' राजा की यह आज्ञा पाकर रसोइया अब तो और भी निडर हो गया। अब वह शाम को मिठाई फल आदि लेकर जहां बच्चे खेला करते थे वहां जाने लगा। वह पापी अवसर पाकर उनमें से एक को पकड़ लेता और उसे मार कर उसका मांस राजा को खिला देता। इस तरह वह रोज निंद्य कर्म करने लगा।

धीरे धीरे जब नगर के बच्चे प्रतिदिन कम होने लगे तो सारे नगर में खलबली पड़ गई। लोगों ने गुप्त रीति

से बच्चों के घातक की खोज लगाना आरम्भ किया। थोड़े ही दिनों में वह रसोइया पकड़ा गया। पूछने पर उसने साफ साफ कह दिया—'मेरा कुछ अपराध नहीं, मैंने जो कुछ भी किया है, राजा की आज्ञा अनुसार किया है'। राजा की अनीति देखकर लोगों को बड़ा विस्मय हुआ। वे विचारने लगे—'यह राजा प्रजा का क्या भला कर सकता है, जो हमारी सन्तान को खाने वाला है। तथा जब हमारे बाल बच्चे ही न रहेंगे तो हमारा जीवन किस काम का ? धन धन्यादि जितनी वस्तुएँ हम संग्रह करते हैं, सब बच्चों के लिये ही तो करते हैं। ऐसी दशा में हम लोग तो यहां रहेंगे हमारा सर्वनाश हो जायेगा।'

अन्त में सब लोगों ने विचार कर यह निश्चय किया कि राजा बड़ा दुष्ट और पापी है। इसे देश से निकाल देना चाहिये। हम लोग ऐसे राजा को कैसे रख सकते हैं ? और क्यों कर उसकी सेवा कर सकते हैं ? अगले दिन सब लोग राजदरबार में गये। राजा सिंहासन पर बैठा हुआ था सब लोगों ने मिल कर उसे राज गद्दी से उतार दिया, और उसके किसी गोत्रीय पुरुष को सिंहासन पर बैठा दिया।

इस प्रकार राजा बक राज्य से भ्रष्ट होकर दुःख से दिन बिताने लगा। पाप वासना न बुझी। लोगों ने उसका

नगर में आना बन्द कर दिया। लोग उसे राक्षस समझने लगे, वह यहाँ तक क्रूर हो गया कि जो जीव उसके सामने आ जाता उसे जीता न छोड़ता। ठीक है ऐसे खोटे मार्ग में जाने वालों को विचार कहाँ रहता है। एक दिन वनमें घूमते हुए उसे वसुदेव ने देखा। वसुदेव बड़े नीतिज्ञ और बलवान थे, यद्यपि वह उस समय अकेले थे, तो भी वे निर्भय होकर वक से लड़े, और उसे मार गिराया। वह मर कर दुर्गति में गया।

देखो, कहाँ तो वक का उत्तम राज्य और कुल और कहाँ मनुष्य के मांस का खाना। इसी से उसे राज्य से पतित होना पड़ा। अन्त में दुर्गति में जाना पड़ा।

सच है अन्यायी तथा अत्याचारी का किसी जगह सत्कार नहीं होता, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो। उसके माता, पिता, पुत्र, मन्त्री आदि सब उसके विरुद्ध हो जाते, सब जानते हैं। मांस न वृक्षों से उत्पन्न होता, न पृथ्वी पर उगता है और न पहाड़ से पैदा होता है। यह निरपराध पशु पक्षी आदि जीवों के मारने से पैदा होता है। मांस के खाने से अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। बुद्धि बिगड़ जाती है। उसका छूना भी पाप है। सारांश यह है कि मांस निंद्य है। पाप का मूल है। पवित्रता का सर्वनाश करने वाला है। दुःख का देनेवाला है। दोनों लोकों में बुराई का

हेतु है। इसलिये धर्मात्मा पुरुष मांस कभी नहीं खाते हैं

प्रश्नावली

१—माँस खाना क्यों बुरा है ?

२—माँस खाने से क्या २ हानियाँ होती हैं ?

३—मांसाहार किसे कहते है ? नक राजा को मांस खाने के कारण क्या सकट उठाना पड़ा ?

४—नक राजा की कहानी सुनाओ और बताओ कि इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

५—प्रजा ने नक राजा को राज्य से क्यों भ्रष्ट कर दिया ?



पाठ २०—मदिरा से हानि

एक समय एकपात् नाम का विद्वान् ब्राह्मण सन्यासी अपने नगर से गंगाजी की यात्रा के लिये रवाना हुआ चलते-चलते वह विन्ध्याटवी में जा पहुँचा। वहाँ कुछ नीच लोग मदिरा पी पी कर नाच कूद रहे थे, गा रहे थे और अनेक प्रकार की कुचेष्टाओं में मस्त थे। अभागा सन्यासी इस टोली के हाथों पड गया।

चाण्डालों ने सन्यासी का बड़ा आदर किया और कहने लगे 'आइये महाराज! आज हमारे लिये बड़ी खुशी का दिन है जो आप सरीखे महात्मा इस खुशी के मौके पर

हमारे यहाँ पधारे। आइये मांस भक्षण कीजिये, शराब पीजिये और हमारे साथ नाच कूद में शामिल होकर मजे उड़ाइये।'

चाडालों की ऐसी बातें सुनकर बेचारे सन्यासी के तो होश उड़ गये। इन शराबियों को क्या कहें? कैसे समझायें? बेचारा बड़े संकट में पड़ गया। फिर कुछ सोच कर बोला—भाइयो! एक तो मैं ब्राह्मण और फिर उसमें भी सन्यासी। भला बताओ मैं मांस और मदिरा कैसे सेवन कर सकता हूँ? कृपा कर मुझे जाने दीजिये।'

इस पर उन चाडालों ने कहा—'महाराज कुछ भी हो हम तो आप को कुछ प्रसाद पाये बिना नहीं जाने देंगे। यदि आप अपनी राजी से खालें तो अच्छा है। नहीं तो कैसे बनेगा वैसे हम खिला कर छोड़ेंगे। हमारी प्रार्थना स्वीकार किये बिना आप जीते जी कभी नहीं जा सकते। अब तो सन्यासी जी घबराये और मन ही मन में सोचने लगे—'यदि मैं मांस खाता हूँ या विषय सेवन करता हूँ तो बड़ा दोष लगेगा और उसका दण्ड भी कठिन भुगतना पड़ेगा। पर जो साधारण जो, गुड़ आँवले आदि से बनी शराब पीते हैं, वह शराब पीना नहीं कहा जा सकता। इसलिए ऐसी शराब मुझे ये पिलाते हैं उसके पीने में न दोष है, न उससे मेरा सन्यास ही बिगड़ता है।

यह विचार कर उन मूर्ख ने शराब पीली। शराब पाने के थोड़ी देर बाद नशा चढ़ने लगा। बिचारे ने कभी शराब नहीं पी थी, इसलिये उस पर शराब का और भी अधिक नशा चढ़ा। शराब के नशे में चूर होकर वह सब सुध बुध भूल गया। उसे अपने पराये का ज्ञान न रहा, वह बहुदा बकवाद करने लगा। लगोटी फेंक कर वह भी उन लोगों की तरह नाचने कूदने लगा। सच है खोटी सङ्गति कुल, धर्म, पतिव्रता आदि सब बातों का नाश कर देती है।

बहुत देर तक तो सन्यासी उसी तरह नाचता कूदता रहा। पर जब कुछ थोडा सा थक गया तो उसे बड़े जोर की भूख लगी। वहाँ पर खाने के लिए मांस के सिवाय क्या था? सन्यासी ने उसे ही खा लिया। सन्यासी नशे में तो था ही,पेट भर खाते ही उसे काम विकार ने सताया। उसने एक चाडाल की स्त्री की ओर बुरी दृष्टि से देखा और उसके प्रति अपनी बुरी कामना प्रकट की। चाडाल लोग अपनी स्त्री का यह तिरस्कार न सह सके। सन्यासी को पकड़ कर उन्होने भुजाओं के बीच में रखकर इतने जोर से दबाया कि बेचारे के प्राण पखेरू उड गये। इस प्रकार आर्तध्यान से मर कर वह खोटी गति को गया।

देखो सन्यासी कैसा विद्वान और धर्मात्मा था, परन्तु

मदिरा पीने से उसकी कैसी गति हुई। उसका सब धर्म कर्म भ्रष्ट हो गया, विवेक जाता रहा अन्त में मदिरा के कारण उसे अपने प्राण तक देने पड़े।

मदिरा पीने वाला सदाचरण को भूल जाता है, हिंसा झूठ, चोरी, कुशील आदि पाप करने लगता है। मदिरा पीने से लाभ कुछ नहीं होता, किन्तु बहुत से शारीरिक और मानसिक कष्ट सहने पड़ते हैं, अनेक रोग हो जाते हैं। नशा हर प्रकार का बुरा है। गांजा, चरस, अफीम, बीड़ी, चुरट, तम्बाकू सभी मादक पदार्थ बुरे होते हैं। इनको भूल कर भी सेवन नहीं करना चाहिए। जो पुरुष मदिरा या अन्य नशीली चीजों के सेवन करने वालों का साथ करते हैं उन्हें बहुत दुःख उठाने पड़ते हैं। मदिरा बड़ी अपवित्र होती है। चीजें सड़ाकर बनाई जाती है। हिंसा की यह खान है। दूसरे भाग में तुम पढ़ चुके हो कि मदिरा पान से यादवों का सर्व नाश हुआ और द्वारका जल गई। इस लिए मदिरा आदि नशीली चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। कुलीन पुरुषों को तो मदिरा छूना भी नहीं चाहिए।

प्रश्नावली

१—सन्यासी को शराब पीने की बुरी आदत कैसे पड़ गई?

२—पीने से सन्यासी की क्या दुर्गति हुई?

३—तुम्हारी समझ में शराब पीने वाला अहिंसा-धर्म का पालन कर सकता है या नहीं ?

४—मदिरा पान से क्या-क्या हानियाँ होती हैं ?

५—इस कहानी को पढ़कर तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

६—बीड़ी, चुरट, तम्बाकू का सेवन अच्छा है या बुरा ?

—०•०—

पाठ २१

वेश्यागमन से हानि

चम्पापुरी में एक भानुदत्त सेठ रहता था। उसकी स्त्री का नाम सुभद्रा था, पुण्योदय से उसके एक पुत्र हुआ। उसका नाम चारुदत्त रक्खा गया। चारुदत्त की बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। पढ़ने योग्य होने पर उसके पिता ने उसे गुरु के पास पढ़ने भेज दिया। चारुदत्त बड़ा सुशील बुद्धिमान और परिश्रमी था। थोड़ेही दिनों में उसने अनेक शास्त्र पढ़ लिये।

चारुदत्त दयालु और परोपकारी बालक था। एक समय वह अपने मित्रों के साथ बगीचे में खेल रहा था कि उसके कानों में कहीं से रोने की आवाज आई। आवाज सुनते ही चारुदत्त का हृदय दया से उमड़ आया। जिस ओर से आवाज आ रही थी वह उसी ओर चल पड़ा, थोड़ी दूर जाकर उसने देखा कि कोई पुरुष कीलित होकर

बँधा हुआ एक वृक्ष की डाला म लटका हुआ है और बड़े कष्ट म है। चारुदत्त उसके पास गया और उसी समय अपनी चतुराई से उस बन्धन रहित कर दिया। उसको धैर्य बधाया और योग्य ओषधि तथा आहार पान देकर सन्तुष्ट किया।

दोहा—निज सुख की परवा न कर, पर दुख करते दूर।
जन्म सफल करत सदा, वे दयालु वे शूर॥

जब चारुदत्त पढ़ लिखकर निपुण हो गया तो उसके पिता ने उसका विवाह सिद्धार्थ सेठ की मित्रावती नाम की कन्या के साथ कर दिया। मित्रावती बड़ी सुशिक्षिता और सदाचारिणी थी। यद्यपि चारुदत्त का विवाह हो गया था पर विवाह का रहस्य अभी तक उसकी समझ म न आया उसे विषय-वासना छू तक नहीं पायी थी। उसे तो रातदिन अपनी पुस्तकों म प्रेम था। वह उन्हीं क अभ्यास विचार, मनन आदि में सदा मग्न रहा करता था।

इसी चम्पापुरी म एक वेश्या रहती थी। उसका नाम था वसन्ततिलका। उसके यहाँ परम सुन्दरी और सब प्रकार की कलाओं म चतुर वसन्तसेना नाम की उसकी कन्या भी रहती था। एक दिन चारुदत्त अपने चचा रुद्र दत्त क साथ घूमने को गया। व दोनों वसन्ततिलका के मकान के नीचे पहुच ही थे कि इतने म राजा क दो हाथी

लड़ते लड़ते वहां आ पहुँचे। उनकी लड़ाई से सड़क बन्द हो गई। बचने का और कोई उपाय न देख रुद्रदत्त जल्दी से चारुदत्त का हाथ पकड़ बसन्ततिलका वेश्या के मकान पर जा चढ़े। वह वेश्या रुद्रदत्त को तो पहिले से ही जानती थी। सड़क खुलने तक रुद्रदत्त बसन्ततिलका के साथ शतरञ्ज खेलने लगा और चारुदत्त बैठा रहा। खेल मे रुद्रदत्त कई बार हारा, चारुदत्त अपने चचा को हारता देखकर स्वयं खेलने लगा।

खेलते खेलते बसन्ततिलका चारुदत्त से कहने लगी—'सेठ साहब !' देखो मैं तो बूढ़ी हो चुकी हूँ। आप अभी युवा हैं। इसलिए मेरे साथ आपका खेलना उचित नहीं मालूम देता। एक मेरी परम सुन्दरी पुत्री बसन्तसेना है, आप उसके साथ खेलें। मे उसे अभी बुलाये देती हूँ। चारुदत्त बोला—'जैसा आप उचित समझें, मुझे कुछ इन्कार नहीं। बसन्तसेना आ गई और चारुदत्त उसके साथ शतरंज खेलने लगा। खेलते खेलते वह उस पर मोहित हो गया। चारुदत्त ने अपना बहुत सा धन वेश्या को दे डाला आखिर मे वह वेश्या के मकान पर ही रहने लगा।

चारुदत्त के पिता भानुदत्त ने चारुदत्त को बुलाने के लिए अनेक प्रयत्न किये। पर उसके एक न लगा। उसने पिता के घर जाने से सर्वथा इन्कार कर दिया। पुत्र की

यह अवस्था देखकर भानुदत्त ने सोचा कि, यह कुव्यसन की परम सीमा पर पहुँच चुका है, इसका छुटकारा होना कठिन है। मैं अपने कर्तव्य से क्यों चूकूं ? यह विचार कर वह साधु हो गया और अपनी आत्मा का कल्याण करने लगा।

इधर चारुदत्त की हालत दिनों दिन अधिक बुरी होने लगी। उसने अपना सब धन नष्ट कर डाला। जब पैसा पास न रहा तो अपना मकान गिरवी रख दिया। अपनी माता और स्त्री का सब जेवर नष्ट कर डाला। आहा ! कर्म का फल बड़ा विचित्र होता है ! कौन जानता था कि चारुदत्त की यह दशा हो जायगी, और उसे एक-एक पैसे को मोहताज होना पड़ेगा। चारुदत्त को ऐसा दीन, दरिद्री समझ कर, बूढ़ी गणिका ने अपनी लड़की से कहा—'पुत्री अब चारुदत्त भिखारी, दरिद्र, हो चुका है। अब इसकी प्रीति छोड़ दो और किसी धनिक युवक के साथ प्रेम करो वेश्याओं का यही कर्तव्य है कि सुन्दर होने पर वह निर्धन पुरुष से प्रेम करना छोड़ दें। बसन्तसेना पर इन बातों का कुछ असर न हुआ।

एक रोज रात्रि को चारुदत्त और बसन्तसेना गहरी नींद सो रहे थे। बसन्ततिलका ने भोजन के साथ कोई नशीली वस्तु खिला दी थी। निद्रा के आधीन देख बसन्त

तिलका ने चारुदत्त के सब वस्त्राभूषण उतार लिए और उसकी एक गठरी सी बनाकर नीचे पाखाने में डाल दिया। जब प्रातःकाल हुआ तो कुत्ते उसका मुह चाटने लगे इस समय पुलिस का एक सिपाही वहा आ गया। उसने चारुदत्त को पाखाने से बाहर निकाला। उसे कुछ सुध आई वह वसन्ततिलका की सब बदमाशी समझ गया। सिपाही के पूछने पर उसने अपना सारा वृतान्त कह सुनाया, अपनी दशा देख उसे दुःख हुआ।

चारुदत्त की आँखें कुछ खुलीं। विचारने लगा, वेश्याओं की प्रीति धन के साथ होती है। जिसके पास जब तक पैसा रहता है, उससे तभी तक वे प्रेम करती हैं जहाँ धन नहीं वहा वेश्या का प्रेम नहीं। अब उसे ज्ञात पड़ा कि वेश्यागमन का ऐसा भयङ्कर परिणाम होता है। अब वह एक पल भर के लिए वहा न ठहरा और अपनी दशा सुधारने की धुन में विदेश चलता बना। इस हालत में उसने अपना कलङ्कित मुख अपनी माता को दिखाना भी उचित न समझा।

बालको! विचार करो, चारुदत्त की [illegible] क्या हालत थी। और उसका घराना कैसा [illegible] परन्तु वह वेश्या के जाल में फसा उसकी [illegible] कष्ट भोगने पड़े, उसे पाखाने तक में [illegible] पड़ा

वेश्या धन से ही प्रेम करती है, सच्चा प्रेम वह किसी से नहीं करती।

सज्जन लोग इस प्राणघातिनी का सगदूर से ही त्याग करते हैं। यह विष की बेल है, आपत्ति की भूमि है, धन, धर्म, शरीर, यश सबका नाश करने वाली है। वेश्या की संगति से नियम,व्रत, तप, शील, संयम आदि सब गुण नष्ट हो जाते हैं। देखो, चारुदत्त पहिले कितना धर्मात्मा परोपकारी और दयालु था। इस पापिन वश्या की संगति से उसकी कैसी दुर्दशा हुई। यह जान कर ज्ञानियो! वश्या सेवन जैसे कुव्यसन का दूर से ही त्याग करो।।

प्रश्नावली

१—चारुदत्त किसका पुत्र था? उसका स्वभाव कैसा था?
२—वेश्या का प्रेम किस वस्तु में अधिक होता है?
३—वेश्यागमन से चारुदत्त की क्या दुर्गति हुई?
४—वेश्या संगति से क्या क्या हानियाँ होती हैं?
५—चारुदत्त की कथा से तुमको क्या शिक्षा मिलती है? अपने शब्दों में बताओ।



पाठ २२—शिकार से हानि

कल्याण कटक नगर में भैरव नाम का शिकारी रहता था। वह प्रतिदिन शिकार के लिए जंगल में जाया करता था। जिस दिन उसे शिकार मिल जाता बड़ा खुश होता न मिलता तो दुःखी होता। एक दिन शिकार की खोज करते करते वह विन्ध्याचल के वनों में जा पहुंचा। वहां उसने कुछ दूर हिरनों के झुण्ड को चरते हुए देखा। वह अपना धनुष खींच कर दबे पाव उनकी ओर चला। जब पास पहुंचा तो उसने एक हिरण पर तीर चलाया। तीर लगते ही बेचारा हिरण पृथ्वी पर गिर पड़ा।

भैरव इस मरे हुए हिरन को लेकर अपने घर को लौट रहा था। राह में उसने एक भयानक सूअर को देखा। सूअर को देखते ही मनमें विचार आया कि यदि इस सूअर का भी शिकार कर लिया जाय तो अच्छा हो। उसने हिरण को पृथ्वी पर रख कर सूअर पर बाण चलाया, दैव योग से उसका बाण चूक गया। इतने में सूअर क्रुध हो कर उस शिकारी पर झपटा और बादल सी गर्जना कर उसकी कमर पर ऐसी टक्कर मारी कि वह टूटे पेड के समान धड़ाम से पृथ्वी पर गिर पड़ा और आर्तध्यान से मर कर दुर्गति को गया। सच कहा है—

'जो गल काटे और का, अपना रहे कटाय।'

देखो शिकारी ने रसना इन्द्रिय की लोलुपता से निरपराध दीन हिरण को मारा। उसने बहुत बड़ा पाप कमाया जो उसी समय उदय में आकर उसके प्राणों का घातक बना।

बालको! शिकार खेलने वालों का हृदय बड़ा ही कठोर और निर्दयी होता है। उनकी आँखों से सदा क्रोध की चिंगारियाँ छूटा करती हैं। उनकी बुद्धि क्रूर होती है और सदा उनके दिल म पाप वासनाय जाग्रत रहती हैं। बहुत से लोग शिकार खेलने को बड़ी वीरता कहते हैं, पर वह मिथ्या है। भला जिसमें निरपराध जीवों के प्राण का घात किया जाय वह वीरता का काम कैसे हो सकता है। हम सब जानते हैं कि जरा सा काँटा चुभ जाने से हमें कितना दुःख होता है, तब जिसके प्राण लिए जाते हैं, उसे कितना कष्ट होता होगा?

इसलिए भाइयो! यदि तुम अपना और दूसरों का भला चाहते हो, यदि तुम्हारे दिल में कुछ दया है, यदि तुम अपने जीवन को शांतिमय बनाना चाहते हो, तो शिकार के भाव को अपने हृदय से निकाल कर फेंक दो।

प्रश्नावली

कौन था और उसका क्या काम था?

३—शिकार खेलना बहादुरों का कार्य है या नहीं ? यदि नहीं तो क्यों नहीं ?

४—शिकार खेलने से क्या हानियाँ होती हैं ?

५—कथा को सुनाते हुए बताओ कि भैरव को शिकार खेलने का क्या बुरा फल भोगना पड़ा ?

६—इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है ?

७—'जो गला काटे और का, अपना रहे कटाय' इसका अर्थ अपने शब्दों में समझाओ।

पाठ २३—चोरी का बुरा फल

कौशाम्बी नगरी में राजा सिंहासन राज्य करते थे। वहां एक चोर रहता था जो बड़ा कपटी और ठग था। दिन में वह पंचाग्नि तप करता था और रात्रि में चोरी किया करता था। लोगों को उसका छल मालूम नहीं था। सब उसे तपके कारण बड़ा तपस्वी और महात्मा समझते थे।

जब नगर में बहुत सी चोरियां होने लगीं तो नगर वासियों में खलबली पड़ गई। सब इकट्ठे होकर राज-दरबार में पहुंचे, और हाथ जोड़कर राजा से प्रार्थना करने लगे कि महाराज ! हम बड़े दुःखी हैं। नगर में प्रति दिन चोरी होने लगी है और चोर का पता नहीं चलता। ...

ने उनका चोरी गया हुआ माल सब लौटा दिया और भिखारी ब्राह्मण को बड़ा इनाम दिया।

बालको! देखो चोरी से तापस की कैसी दुर्दशा हुई सारे नगर में उसकी निन्दा होने लगी और राजा ने उसे बड़ा दण्ड दिया। बुरी मौत मर कर खोटी गति में गया।

चोरी से बढ़कर कोई पाप नहीं है। चोर को कोई पास नहीं फटकने देता। चोर का विश्वास जाता रहता है। चोरी का माल ठहरता नहीं, व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। चोर के सब गुण नष्ट हो जाते हैं। चोर को हर समय चिन्ता और भय दोनों बने रहते हैं। अनेक शारीरिक और मानसिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। इसलिए भूलकर भी चोरी की बुरी आदत न डालो।

प्रश्नावली

१—तपस्वी कौन था और उसका क्या कार्य था? क्या वह एक सच्चा महात्मा था?

२—राजा ने कोतवाल को क्या हुक्म दिया? और क्यों दिया? यह भी बताओ।

३—कोतवाल ने चोर का पता कैसे लगाया?

४—तपस्वी तथा उसके चेला को चोरी करने का क्या फल मिला?

५—इस कहानी के पढ़ने से क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ २४—पर स्त्री सेवन का बुरा फल

जुए में अपना सब राजपाट हारजाने के बाद दृढ प्रतिज्ञ पाडव द्रौपदी सहित धीरे धीरे नगर से बाहर निकले। बहुत दिनों तक अनेक वन, देश, नगर, ग्राम आदि में घूमते-घूमते विराट नगर में पहुँचे। वहा के राजा का नाम विराट था। ये लोग नाना वेष बना कर राजा के पास गये। युधिष्ठिर महाराज भाट बने, भीम रसोइया बन कर गये, और अर्जुन ने कचुकी का भेष धारण किया, सहदेव ज्योतिषी बनकर गये, और नकुल साईस बने। सती द्रौपदी मालिन के भेष मे गई। राजा इनसे बहुत प्रसन्न हुआ और जो जिस भेष मे था उसे उसी कार्य मे नियुक्त कर दिया। इस प्रकार सब राजा के सेवक बन कर रहने लगे।

राजा विराट की एक सुन्दर और गुणवती स्त्री थी। इसका भाई अर्थात् महाराज का साला, कीचक एक दिन अपनी बहिन से मिलने आया। उसने रनवास म मालिन क भेष में द्रौपदी को देखा। देखते ही उसके ऊपर मोहित हो गया और प्रति दिन द्रौपदी से अपनी पाप-वासना प्रकट करने लगा।

एक दिन किसी शून्य मकान में कीचक ने द्रौपदी का

लगा । अन्त में भीम के हाथ से उसकी मृत्यु हुई । अत
पर-स्त्री सेवन से दोनों लोक बिगड़ते हैं । हजारों वर्ष क
उज्वल यश एवं क्षणमात्र म नष्ट हो जाता है । परस्त्री सेव
करने वाले को इस लोक में धनहानि, शारीरिक कष्ट औ
परलोक में नरकादि कुगतियों के दुःख भोगने पड़ते है
जो पर स्त्री का सेवन करते हैं वे मनुष्य नहीं नीच हैं ।

इसलिए हे बुद्धिमानों, पर-स्त्री की संगति से अप
रक्षा करो ।

प्रश्नावली

१—द्रौपदी कौन थी ? द्रौपदी और पाण्डव विराट राजा के य
गुप्त वेष म क्या रहते थे ?

२—कीचक कौन था ? उसने द्रौपदी के साथ कैसा व्यवह
किया ?

३—कीचक की मृत्यु किस प्रकार हुई ? तुम्हारे विचार में भीम
कीचक को धोखे से मार कर अच्छा किया या बुरा ?

४—पर-स्त्री को बुरी दृष्टि से देखने के कारण कीचक को क
बुरा फल उठाना पड़ा ?

—X०X—

पाठ २५—सप्त व्यसन

बालको ! व्यसन बुरी आदत को कहते हैं । यह पीछे लग जाने पर बड़ी कठिनता से छूटता है । व्यसन आपत्ति को भी कहते हैं । इनके कारण इस लोक में दुःख और अपयश तथा परलोक में दुर्गति और निन्दा होती है । संसार में नरक व पशुगति के तथा दुखी, दरिद्री मनुष्यगति के सर्व संकटों के मूल कारण ये व्यसन ही हैं । जो मानव इनसे बचकर रहते हैं वे अपने जीवन को सफल करते हैं । वे सदा सुखी रहते हैं । इन सातों व्यसनों की कथायें तुम पढ़ चुके हो । इन सातों व्यसनों से अपने को हमेशा बचाते रहो । नीचे लिखे दोहे को कण्ठस्थ करलो ।

दोहा—जूआ खेलन मांस मद वेश्या व्यसन शिकार ।
चोरी पर रमनी रमन, सातो व्यसन निवार ॥

प्रश्नावली

१—व्यसन किसे कहते हैं और कितने हैं ? नाम बताओ
२—मदिरापान का त्यागी और कौन कौन सी वस्तुए नहीं सेवन करेगा ।
३—दूसरों की रक्षा करने के लिये हिंसक पशुओं या जीवों को मारना अच्छा है या बुरा ? कारण सहित बताओ ।



पाठ २७—चौबीस तीर्थंकरों के नाम चिह्न आदि

नाम	चिन्ह	जन्मनगरी	पिता	माता	निर्वाण भूमि
१ श्री आदिनाथ	बैल	अयोध्या	नाभि राजा	मरुदेवी	कैलाशपर्वत
२ श्री अजीतनाथ	हाथी	अयोध्या	जितशत्रु	विजयसेना	सम्मेदशिखर
३ श्री संभवनाथ	घोड़ा	श्रावस्ती	जितारि	सुसेना	,,
४ श्री अभिनन्दनाथ	बन्दर	अयोध्या	संवर	सिद्धार्था	,,
श्री सुमतिनाथ	चकवा	,,	मेघप्रभु	मङ्गला	,,
६ श्री पद्मप्रभु	लाल कमल	कौशाम्बी	धारण	सुसीमा	,,
पार्श्वनाथ	साथिया	बनारस	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	,,
द्रप्रभु	चन्द्रमा	चन्द्रपुरी	महासेन	सुलक्षणा	,,
पद द	मगर	काकन्दी	सुग्रीव	रमा	,,
१ शीतलनाथ	श्रीवृक्ष	भद्दिलपुर	दृढरथ	सुनन्दा	,,

नं०	नाम	चिन्ह	जन्मनगरी	पिता	माता	निर्वाण भूमि
१२	श्री वासुपूज्य	भैंसा	चम्पापुरी	वसुपूज्य	विजया	चम्पापुर जी
१३	श्री विमलनाथ	शूकर	कम्पिला	सुकृतिवर्मा	श्यामा	सम्मेद शिखर
१४	श्री अनन्तनाथ	सेही	अयोध्या	हरिषेण	सुरजा	"
१५	श्री धर्मनाथ	वज्र	रतनपुर	भानु	सुव्रता	"
१६	श्री शान्तिनाथ	मृग	हस्तिनापुर	विश्वसेन	ऐरा	"
१७	श्री कुन्थुनाथ	बकरा	"	शूरराजा	श्रीमती	"
१८	श्री अरनाथ	मीन	"	सुदर्शन	मित्रा	"
१९	श्री मल्लिनाथ	कलश	मिथिला	कुम्भ	प्रजावती	"
२०	श्री मुनिसुव्रत	कछुवा	राजगृही	सुमित्र	श्यामा	"
२१	श्री नमिनाथ	नीलकमल	मिथिला	विजयरथ	विपुला	"
२२	श्री नेमिनाथ	शङ्ख	द्वारिका	समुद्रविजय	शिवा	गिरिनार पर्वत
२३	श्री पार्श्वनाथ	सर्प	बनारस	अश्वसेन	वामा	सम्मेद शिखर
२४	श्री महावीर	सिंह	पावापुर	सिद्धार्थ	त्रिशला	पावापुर

नोट:—इन चौबीस तीर्थंकरों में से श्रीवासुपूज्य जी, श्री मल्लिनाथ जी, श्री नेमिनाथ जी, श्री पार्श्वनाथ जी और श्री महावीर भगवान ये बाल ब्रह्मचारी हुए हैं।

हवन कर वैदिक यज्ञ मना रहा है। क्या यह ऐसा अन्याय और अधर्म होता ही रहेगा ?

अभी खारवेल सत्रह ही वर्ष के हो पाये थे कि इनके पिता का देहान्त हो गया। कलिंग का राजसिंहासन सूना हो गया। खारवेल बिना पच्चीस वर्ष के हुये उस पर नहीं बैठ सकते थे। अत युवराज पद से देश की रक्षा करने लगे।

एक बार उन्हें मालूम हुआ कि उनके पड़ौसी कश्यप क्षत्रियों को आततायी मूषिक लोग कष्ट पहुचा रहे हैं। दलित प्रसित प्राणियों की रक्षार्थ, झटपट खारवेल ने उन पर चढ़ाई करदी और विजय का झण्डा फहराते हुये राजधानी में लौट आये।

खारवेल अभी लड़के ही थे, परन्तु उनका बल पराक्रम, रण कौशल, नीति, चातुर्य गम्भीरता अनुभव के प्रकट करता था। उन्होंने देशोद्धार के साथ धर्म की उन्नत बनाने का प्रण कर लिया था। पुष्यमित्र पर खारवेल ने दो बार आक्रमण किया। दूसरी बार वह विजयी हुए। मगध में अब फिर हिंसक पशुयज्ञ कठिन हो गये। इस जीत में खारवेल बहुत सी वस्तुएँ लाये उनमें कलिंग की एक प्राचीन मूर्ति भी लाये जो किसी समय नन्द राजा वहाँ ले गये थे। वह मूर्ति 'अग्र जिन नाम से विख्यात थी और प्रथ

तीर्थंकर ऋषभ देव की थी। खारवेल ने एक सुन्दर मन्दिर बनवाया और उसमें उस मूर्ति को बड़े ठाट बाट विराजमान किया। अब वह राज पद आरूढ़ होगये थे। कलिंग सम्राट कहलाते थे।

उन्होंने पुष्यमित्र के अतिरिक्त दक्षि भारत के सभी राजाओंको अपने आधीन किया। विदेशी य । ं का सरदार डेमीटेरियसु उत्तर भारत पर अपना सिक्का जमा रहा था, और मथुरा तक बढ़ गया। खारवेल ने इस घटना की उपेक्षा नहीं की। किन्तु खारवेल के आने से पहले ही वह मथुरा छोड़ सीमा प्रान्त की ओर चला गया। सच मुच खारवेल क रण कौशल को देखकर लोग चकित होते हैं, और उन्हें भारत का नैपोलियन बताते हैं।

जिस प्रकार खारवेल ने रणक्षेत्र में अपना नाम उज्ज्वल किया उसी प्रकार अपने धार्मिक कार्यों द्वारा भी वे अपना नाम अमर कर गये हैं उनके बनवाये हुए सुन्दर गुफा मन्दिर और जैन मुनियों के लिए आश्रम खण्डागिरी उदयगिरी पर्वत पर मौजूद हैं। इसी स्थान पर खारवेल का एक बड़ा भारी शिलालेख खुदा हुआ है, जिसके पढ़ने से आज हमें इस धर्मवीर का नाम जानने को मिलता है।

खारवेल को बचपने से ही धर्म की लगन थी। राजा

होकर उसने उस अमलीजामा पहना दिया, जैन धर्म की प्रभावना हुई। वह स्वयं कुमारी पर्वत पर जैन ऋषियों की संगति में रह कर धर्माचरण का अभ्यास करता था। वह बड़ा धीर वीर राजा था।

बालको! जब तुम भी बड़े हो जाओ और किसी ऊँचे पद पर पहुँचो तो अपने प्यारे धर्म के उन्नत करना न भूलना। धर्म को अपनाये रहोगे तो तुम्हारा नाम भी अमर हो जावेगा। आप भी खारवेल की तरह दृढ़ श्रावक, जिनेंद्र भक्त, निरग्रन्थ गुरुसेवी, धर्माचरणी बनें।

प्रश्नावली

१—महाराजा ऐल खारवेल कौन से वंश में उत्पन्न हुए थे और वे पढ़ते समय क्या सोचा करते थे?

२—युवराज पद से तुम क्या समझते हो?

३—खारवेल को भारत का नैपोलियन क्यों कहते हैं?

४—खारवेल ने राजा होकर अपनी प्रजा पालन के अतिरिक्त और क्या क्या बड़े कार्य किये? खारवेल के जीवन से तुमने क्या सीखा?

पाठ २६—यमपाल चाण्डाल

काशी के राजा पाकशासन ने एक समय ढिंढोरा पिटवा दिया—'नन्दीश्वर पर्व में आठ दिन किसी जीव का

वध न हो, इस राजाज्ञा का उल्लघन करने वाला प्राण दण्ड का भागी होगा'। राजा के एक पुत्र था जिसका नाम तो धर्म था, पर वह था [illegible] सप्त व्यसनों का सेवन करने [illegible] मगर [illegible] मास लोलुपी था। मॉस हुए [illegible] दिन भी न रहा जाता था। एक दिन राजाज्ञा के डर से वह बगीचे में गया और राजा के खास मेंढे को जो कि वहीं बँधा रहता था मार डाला।

दूसरे दिन जब राजा ने मेंढे को न देखा, और बहुत खोज करने पर भी पता न चला, तब राजा ने मेंढे का पता लगाने को बहुत से गुप्तचर नियत किये। एक गुप्तचर बाग में भी चला गया। बाग का माली रात को अपनी [illegible] से राजपुत्र द्वारा मेंढा मारे जाने की [illegible] यह हाल गुप्तचर ने सुन लिया और [illegible] रहा था [illegible] देकर को बड़ा क्रोध आया [illegible] जाहिर कर दिया। राजा दी कि राज पुत्र को [illegible] को बुलाकर आज्ञा इसने जीवहिंसा की [illegible] पर चढ़ा दो। एक तो [illegible] भंग की है।

कोतवाल राजपुत्र [illegible] भूमि में ले गया, और सिपाहियों को [illegible] काम के लिए [illegible] को बुलाया तो इसी निरग्रन्थ जैन [illegible] दिन परम

होकर उसने उसे अमलीजामा पहना दिया, जैन धर्म की प्रभावना हुई। वह स्वयं कुमारी पर्वत पर जैन ऋषियों की संगति में रह कर धर्माचरण का अभ्यास करता था। वह बड़ा धीर वीर राजा था।

बालको ! जब तुम भी बड़े हो जाओ, ... ऊँचे पद पर पहुँचो तो अपने प्यारे धर्म के ... करना न भूलना। धर्मको अपनाये रहोगे तो तुम्हें ... भी अमर हो जावेगा। आप भी खारवेल की तरह दृढ़ प्रतज्ञ, जिनेंद्र भक्त, निरग्रन्थ गुरुसेवी, धर्माचरणी बनें।

प्रश्नावली

१—महाराजा ऐल खारवेल कौन से वंश में उत्पन्न हुए थे और वे पढ़ते समय क्या सोचा करते थे ?

२—युवराज पद से तुम क्या समझते हो ?

३—खारवेल को भारत का नेपोलियन क्यों कहते हैं ?

४—खारवेल ने राजा होकर अपनी प्रजा पालन के अतिरिक्त और क्या क्या बड़े कार्य किये ? खारवेल के जीवन से तुमने क्या सीखा ?

पाठ २६—यमपाल चाण्डाल

... के राजा पाकशासन ने एक समय ढिंढोरा ... दिया—'नन्दीश्वर पर्व में आठ दिन किसी जीव का

होकर उसने उसे अमलीजामा पहना दिया, जैन धर्म की प्रभावना हुई। वह स्वयं कुमारी पर्वत पर जैन ऋषियों की संगति में रह कर धर्माचरण का अभ्यास करता [illegible] वह बड़ा धीर वीर राजा था।

बालको ! जब तुम भी बड़े हो जाओ [illegible] किन. ऊँचे पद पर पहुँचो तो अपने प्यारे धर्म की [illegible]त करना न भूलना। धर्म को अपनाये रहोगे तो तुम्हारा [illegible] भी अमर हो जावेगा। आप भी खारवेल की तरह दृढ़ प्रतिज्ञ, जिनेंद्र भक्त, निरग्रन्थ गुरुभक्त, धर्माचरणी बनें।

प्रश्नावली

१—महाराजा ऐल खारवेल कौन से वंश में उत्पन्न हुए थे और वे पढ़ते समय क्या सोचा करते थे?

२—युवराज पद से तुम क्या समझते हो?

३—खारवेल को भारत का नैपोलियन क्यों कहते हैं?

४—खारवेल ने राजा होकर अपनी प्रजा पालन के अतिरिक्त और क्या क्या बड़े कार्य किये? खारवेल के जीवन से तुमने क्या सीखा?

पाठ २६—यमपाल चाण्डाल

काशी के राजा पाकशासन ने एक समय ढिंढोरा दिया—'नन्दीश्वर पर्व में आठ दिन किसी जीव का

वध न हो, इस राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाला प्राण दण्ड का भागी होगा। राजा के एक पुत्र था जिसका नाम तो धर्म था, पर वह था बड़ा पापी। सप्त व्यसनों का सेवन करता था। मगर सबसे अधिक मांस लोलुपी था। माँस हुए बिना उससे एक दिन भी न रहा जाता था। एक दिन राजाज्ञा के डर से वह बगीचे में गया और राजा के खास मेंढे को जो कि वहीं बँधा रहता था मार डाला।

दूसरे दिन जब राजा ने मेंढे को न देखा, और बहुत खोज करने पर भी पता न चला, तब राजा ने मेंढे का पता लगाने को बहुत से गुप्तचर नियत किये। एक गुप्तचर बाग में भी चला गया। बाग का माली रात को अपनी स्त्री से राजपुत्र द्वारा मेंढा मारे जाने की बात कह रहा था। गुप्तचर ने सुन लिया और राजा से जाकर कह दिया। राजा को बड़ा क्रोध आया। उसने कोतवाल को बुलाकर आज्ञा दी कि राजपुत्र को ले जाकर शूली पर चढ़ा दो। एक तो इसने जीवहिंसा की है। दूसरे राजाज्ञा भंग की है।

कोतवाल राजपुत्र धर्म को श्मशान भूमि में ले गया, और सिपाहियों को भेजकर यमदण्ड को बुलाया जो इसी काम के लिए नियत था। पर यमपाल ने एक दिन परम निरग्रन्थ जैन मुनि के पास नियम लिया था कि मैं चतुदर्शी

को जीव वध नहीं करूँगा। आज चतुर्दशी का दिन था। सिपाहियों को आता देख कर वह घर में छिप गया और अपनी स्त्री से कहा—अगर कोई मुझे बुलाने आये तो उससे कह देना, कि वह दूसरे गाँव गये हैं। सिपाहियों ने आकर जब चाण्डाली से पूछा तो उसने कह दिया कि वह दूसरे गाव गया है। सिपाहियों ने बड़े खेद के साथ कहा—'हाय! वह बड़ा अभागा है उसका भाग खोटा है। आज ही राजपुत्र के मारने का मौका आया और आज ही चल दिया। अगर वह राजपुत्र को मारता तो उसके सब गहने, कपड़े उसे मिलते'। गहने कपड़ों का नाम सुनकर यमपाल की स्त्री के मुँह में पानी भर आया। उसने अपने पति का हानि लाभ कुछ न सोचकर रोने का ढोंग बनाकर—'हाय! वे आज ही गाँव को चले गये'। मुँह से यह कहकर, हाथ से घर की ओर इशारा कर दिया और छिपे हुए स्वामी को बता दिया।

सिपाहियों ने भीतर जाकर यमपाल को घर से बाहर निकाला। निकालते ही निर्भय होकर उसने कहा—'आज चतुर्दशी का दिन है और मेरा आज अहिंसाव्रत है मेरे प्राण भले ही चले जायें पर मैं आज जीव हिंसा नहीं करूँगा उसका यह उत्तर सुनकर सिपाही उसको राजा के पास ले गये।

राजा एक तो राजपुत्र पर पहले ही गुस्सा हो रहे थे । इस पर यमपाल को राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाला और अभिमानी देखकर कोतवाल को राजा ने आज्ञा दी कि 'जाओ' इन दोनों को मगरमच्छ आदि क्रूर जीवों से भरे हुए तालाब में छोड़ दो । कोतवाल ने ऐसा ही किया और दोनों को तालाब में डाल दिया ।

तालाब में डालते ही पापी धर्म को तो जल के जीवों ने खा लिया । पर यमपाल अपने व्रत पर दृढ़ रहा था इससे उसके उच्च भावों और व्रत के प्रभाव से देवों ने उसकी रक्षा की । उन्होंने धर्मानुराग से तालाब में ही एक सिंहासन पर यमपाल चाण्डाल को बैठा दिया । उसका अभिषेक किया, और बहुत आदर किया । जब राजा-प्रजा को यह हाल मालूम पड़ा तो उन्होंने भी यमपाल को वस्त्राभूषण देकर सम्मानित किया ।

बालको ! यमपाल चाण्डाल का दृढ़ व्रत के प्रभाव से देवों ने कैसा सम्मान किया । पूजा गुणों की होती है, जाति की नहीं । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों को कभी जाति का अभिमान नहीं करना चाहिये ।

देखो एक चाण्डाल भी व्रत के महात्म्य से देवों या राजा द्वारा सम्मानित हुआ, तो और मनुष्य भी

था ऐसा प्रजा को धारण करने तथा पालन हैं क्या नहीं होंगे?—अवश्य होंगे।

प्रश्नावली

१—धारा का राजा कौन था और उसने किस बात का ढिंढोरा पिटवा दिया था?

२—राजा की आज्ञा उल्लंघन करने वाला कौन था और उसे राजा ने क्या दण्ड दिया?

३—धर्मपाल कौन था? उसने क्या व्रत ले रक्खा था?

४—धर्मपाल की स्त्री ने कैसे और क्या अपने छिपे हुए बता दिया?

५—राजा ने धर्मपाल के लिए क्या आज्ञा दी? आज्ञा न होने पर भी धर्मपाल दया । क्यों सम्मानित हुआ?

६—इस कहानी को पढ़कर तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

—×०×—



जैन परिषद् परीक्षा बोर्ड द्वारा स्वीकृत

जैन
धर्म शिक्षावली
तीसरा भाग

(265)

लेखक

...० उग्रसेन जैन, एम. ए., एल. एल. बी., वकील
रोहतक



प्रकाशक :
...ल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद् पब्लिशिंग हाउस,
दरीबा कलाँ, देहली




बार ... | अक्तूबर १९३३ | मूल्य
वीर निर्वाण सम्वत् २४[illegible] | ।=) छः आने

